जैन तीर्थवंदना

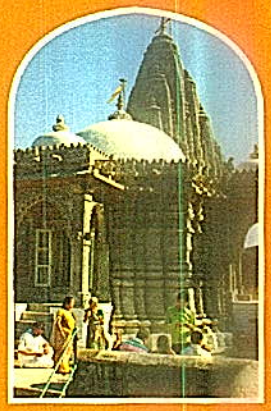

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2542

VOLUME : 6 ISSUE : 10 MUMBAI, APRIL 2016 PAGES : 44 PRICE : ₹25

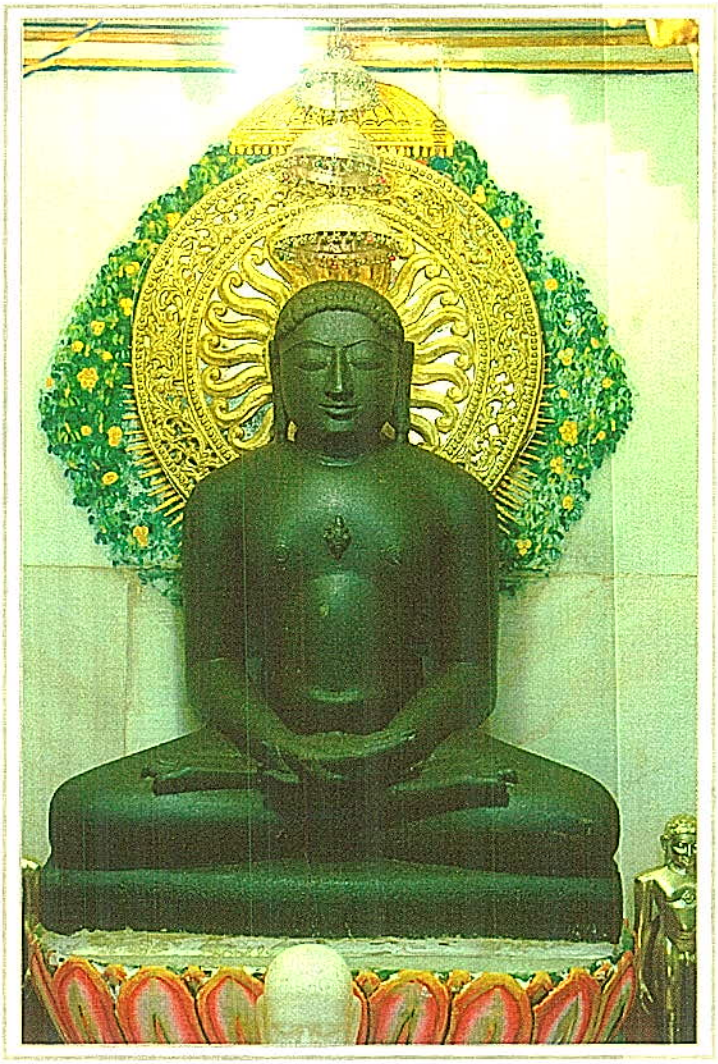

तीर्थंकर श्री 1008 महावीर भगवान

पावागिरी ऊन

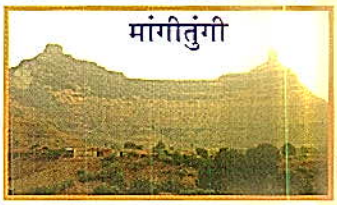

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्षीय संबोधन

भगवान महावीर के जन्म-कल्याण के पावन-पवित्र अवसर पर देश की ११४ साल पुरानी दिगम्बर जैन समाज की संस्था, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से सभी साधर्मी भाइयों-बहनों को हार्दिक बधाई देती हूँ और इस मांगलिक प्रसंग पर करती हूँ; उनका आत्मिक अभिनंदन भी। वैश्विक स्तर पर सारी जैन समाज बडे हर्ष और उल्लास के साथ भगवान की अभिवन्दना के इस पावन-पुनीत अवसर पर, विभिन्न आयोजनों के माध्यम से प्रभु चरणों में सिर्फ अपनी श्रद्धा का अर्घ्य ही समर्पित नहीं करती हैं; प्रत्युत उनके साधनामय जीवन के प्रेरक प्रसंगों से अपने जीवन के परिष्कार के विषय में चिंतन भी करती है। इस पुण्य अवसर पर हमारा प्रयत्न होना चाहिए कि भगवान महावीर का दिव्य-दर्शन, अहर्निश मानव-मन को आलोकित करे; व्रत, संयम और चारित्र्य की शुद्धि सिद्धांत से, व्यवहार के सामंजस्य के साथ-साथ अप्रमत्तता की साधना से और इस प्रतिबद्धता से भी कि एक नए और सशक्त समाज की निर्मिति संभव हो सके- स्व और पर के अभ्युदय की जीवंत प्रेरणा जमीनी सच बन सके।

भगवान महावीर के जन्म कल्याणक के पावन अवसर पर सार्वकालिक और सार्वव्यापिक तीर्थक्षेत्रों की वंदना का भी हमें प्रण लेना चाहिए ताकि हमारे आध्यात्मिक विकास और चारित्रिक तथा सम्यक्त्वशील ध्यानस्थता के आविर्भाव को सकारात्मक गति मिल सके और अंत:करण की शुचिता की हम प्रशस्त निधि सम्प्राप्त कर सकें। आइये, हम एक नई कोशिश करें तीर्थों के संरक्षण, संवर्धन और विकास के माध्यम से जैन कला, संस्कृति, और सभ्यता के जीवंत प्रतीकों के वैश्विक विस्तार की, ताकि भगवान महावीर के अहिंसा, अनेकांत, समता, समानता, सहयोग के दिव्य संदेश विश्वभर में फैल कर हर व्यक्ति के जीवन में आत्मविकास की दिव्य रश्मियों के

आत्मज्ञान रूप पवित्र तीर्थ है (पद्मनन्दि-पंचविंशतिका, चंद्रोदय अ 28)

साथ-साथ विश्व में मैत्री और शांति की स्थापना की संभावना को मूर्त रुप दे सकें। हमने इस संस्था को काल के प्रवाह में बदलाव की आहटों के अनुरुप एक नए स्वरुप के अंगीकरण के लिए प्रतिबद्ध चिंतन किया है और श्रवणबेलगोला में आयोजित चिंतन बैठक में एक सशक्त कार्य-योजना भी हमने निर्मित की है। आपकी संस्था की एक नई वेबसाईट बन रही है और बहुत जल्दी ही सभी को समग्र तीर्थ दर्शन कराने के लक्ष्य को पूरा करते हुए यह लोकार्पित हो जायेगी। हमारी कोशिश है कि कतिपय तीर्थों के जिन मंदिरों के गर्भ गृहों के हम जीवंत दर्शन, दूर बैठे श्रावक-श्राविकाओं को करा कर। हमारा लक्ष्य है कि जैन विरासत की विपुल संपदा का जैन जनों को कोमल सा अहसास तो करा ही सकें; उन तीर्थों से निकलती आध्यात्मिक शुचिता की भाव-तरंगों से उनके मानस के स्फुरित भी करा सकें। हमारा यह भी प्रयत्न है कि शीघ्र ही ऑन-लाइन सुविधाओं से इस वेबसाईट-को सज्जित किया जाय ताकि सुरक्षित पेमेंट गेटवे के माध्यम से तीर्थ संरक्षण हेतु उनके अनुरागी भाव स्वर पा सकें। तीर्थों के विकास की हम नई गाथा सृजित करने का व्रत ले चुके हैं और बहुत शीघ्र ही सम्पूर्ण देश में तीर्थों के जीर्णोद्धार के व्यापक कार्यक्रमों का प्रवर्तन किया जा रहा है। हम अपनी योजना का पूरा ताना-बाना इस पत्रिका के माध्यम से सारे समाज के सामने प्रस्तुत करेंगे।

दिगम्बर जैन समाज की ११४ व. पुरानी इस संस्था के माध्यम से अपने सांस्कृतिक ओर आध्यात्मिक वैभव की संपदा को संरक्षित एवं संवर्धित करने हेतु आप समस्त जैन जनों के सहयोग से मिल-जुल कर एक नए उपक्रम का सृजन कर सकें; यह हम सभी की कोशिश होनी जरुरी है ताकि भगवान महावीर की देशना का वैश्विक विस्तार हो सके।

सभी को भगवान महावीर के जन्म कल्याणक के पवित्र अवसर पर एक बार फिर हार्दिक शुभकामनाएं और बधाईयाँ।

Sarita Jain

सरिता एम.के.जैन

राष्ट्रीय अध्यक्षा

संतो हि हितभाषिण: (उत्तरपुराण, पर्व 70, श्लोक 325) । अर्थ- साधु-संत आत्महित का उपदेश देते हैं ।

आचार्य जिनसेन ने आदिपुराण में लिखा है कि

संसाराब्धेरपारस्य तरणे तीर्थमिष्यते।
चेष्टितं जिननाथानां तस्योक्तिस्तीर्थसंकथा।। 4/8

अर्थात् जो इस अपार समुद्र से पार करे उसे तीर्थ कहते हैं ऐसा तीर्थ जिनेन्द्र भगवान का चरित्र ही हो सकता है। अतः उसके कथन करने को तीर्थआख्यान कहते हैं। भगवान जिनेन्द्र देव के चरित्र को हमारे दिगम्बर मुनि एवं आर्यिका माताएँ बताती हैं एवं इसका ज्ञान जिनवाणी के माध्यम से होता है। फलतः देव–शास्त्र एवं गुरू ही हमारे तीर्थ हैं। तीर्थ को ही धर्म कहा जाता है। इन तीर्थों के संरक्षण करने के लिए ही लगभग 115 वर्ष पूर्व भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की स्थापना की गई एवं तब से यह संस्था सतत् हमारे सभी सिद्ध क्षेत्रों, जन्म भूमियों, कल्याणक क्षेत्रों, अन्य अतिशयों क्षेत्रों आदि के संरक्षण, संवर्द्धन एवं प्रचार–प्रसार में सतत् सचेष्ट है। इस संस्था द्वारा समय–समय पर जैन इतिहास एवं पुरातत्त्व से संबंधित स्मारकों के संरक्षण मूर्ति लेखों, शिलालेखों, पुरावशेषों तथा महान इतिहास को संरक्षित करने वाली प्राचीन पाण्डुलिपियों के संरक्षण के भी प्रयास किये जाते रहे और भविष्य में भी एतदर्थ प्रयास किये जाते रहेगे।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि तीर्थक्षेत्र कमेटी की नवनिर्वाचित अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के. जैन एवं महामंत्री श्री संतोष जैन पेन्ढारी ने संस्था के मुखपत्र **जैन तीर्थवंदना** के संपादन कार्य हेतु मुझे चुना। एतदर्थ में उनका धन्यवाद करता हूँ। यह दायित्व गुरूतर है किन्तु मुझे विश्वास है कि परामर्श मण्डल के वरिष्ठ सहयोगियों प्रो. भागचन्द जैन 'भास्कर', डॉ. शांतिलाल जैन जांगड़ा के अनुभव, डॉ. अजीतदास, प्रो. डी.ए. पाटील और डॉ. अनिल जोहरापुरकर के समर्पण तथा श्री स्वराज जैन एवं श्री राजेन्द्र जैन 'महावीर' की सक्रियता से मैं इस दायित्व को निभा सकूंगा।

मुम्बई कार्यालय में सामग्री के संकलन, संयोजन मुद्रण एवं सम्प्रेषण व्यवस्था का दायित्व निभा रहे श्री दुबेजी का सुदीर्घ अनुभव भी हमारे लिए बहुत उपयोगी है। इतने अनुभवी एवं सक्रिय सहयोगियों की टीम के कारण हम आशा करते हैं कि जैन तीर्थवंदना के माध्यम से अपनी संस्कृति की यथोचित सेवा कर सकेंगे।

आगामी अंक से हमारा प्रयास रहेगा कि हम तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं उसके सभी सात अंचलों की गतिविधियों को तो अधिकाधिक स्थान दें। साथ ही प्रत्येक अंक में उत्तर भारत के एक और दक्षिण भारत के एक तीर्थ का सचित्र, प्रामाणिक विवरण भी प्रस्तुत करें, जिससे हमारे पाठकगण इन तीर्थों के इतिहास और अन्य उपयोगी जानकारी प्राप्त कर तीर्थ यात्रा की ओर प्रवृत्त हो तथा स्वयं के जीवन को धन्य कर सके। दक्षिण भारत के तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण और विकास में पूज्य भट्टारकगणों का योगदान अविस्मरणीय है। हमारा प्रयास होगा कि हर अंक में पूज्य भट्टारक स्वामीजी द्वारा संरक्षित एक–एक तीर्थ का परिचय अवश्य दिया जाये।

दिगम्बर जैन समाज में अलग–अलग पूजा पद्धतियाँ प्रचलित हैं किन्तु सबके आराध्य एवं लक्ष्य एक ही हैं। हमारा प्रयास रहेगा कि हम तटस्थ रहकर सभी की भावनाओं का आदर करते हुये निर्विवाद सामग्री जैन तीर्थवंदना में प्रकाशित करें। क्योंकि हमारा लक्ष्य महान दिगम्बर जैन संस्कृति का उद्घोष करने वाले तीर्थों का संरक्षण प्रचार और प्रसार है।

विद्वान समाज के गौरव होते हैं उनकी प्रतिभा, क्षमता और समर्पण का सम्मान करते हुये हम प्रत्येक अंक में इतिहास, पुरातत्त्व एवं पाण्डुलिपियों पर एक शोध पूर्ण आलेख भी प्रकाशित करने का प्रयास करेगें इस कार्य में सहयोग हेतु मेरा परमस्नेही विद्वत्ज्जनों से विनम्र आग्रह है।

युवा शक्ति समाज का भविष्य होती है तीर्थक्षेत्र कमेटी भी समाज के युवाओं और महिलाओं को जोड़कर उर्जा प्राप्त करना चाहती हैं। तीर्थ विकास में युवाओं की सहभागिता बढ़ाने के लिए हम युवाओं के सुझावों का स्वागत करेंगे और इनको कार्य रूप में परिणत करने हेतु हम अगले अंक में अलग–अलग वर्गों हेतु निबंध/सुझाव प्रतियोगिताओं के आयोजन की घोषणा हेतु प्रयत्नशील हैं। सभी से सहयोग के अनुरोध सहित।

डॉ. अनुपम जैन
प्रधान संपादक

आत्मज्ञान रूप पवित्र तीर्थ है (पद्मनन्दि-पंचविंशतिका, चंद्रोदय अ 28)

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 6 अंक 10 अप्रैल 2016

श्रीमती सरिता एम.जैन	अध्यक्ष
श्री वसंतलाल एम.दोशी	उपाध्यक्ष
श्री महावीरप्रसाद सेठी	उपाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	उपाध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन पी.एन.सी.	उपाध्यक्ष
श्री पंकज जैन	उपाध्यक्ष
श्री संतोष पेंढारी	महामंत्री
श्री शिखरचंद पहाड़िया	कोषाध्यक्ष
श्री विनोद बाकलीवाल	मंत्री
श्री शरद जैन	मंत्री
श्री खुशाल जैन सी.ए.	मंत्री
श्री वीरेश सेठ	मंत्री

प्रो.अनुपम जैन, इंदौर - प्रधान संपादक
उमानाथ दुबे - संपादक

परामर्श मंडल

डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर', नागपुर
डॉ. शांतिलाल जांगड़ा, उदयपुर
प्रो. डॉ.अजित दास, चेन्नई
प्रो. डी.ए.पाटील, जयसिंगपुर
श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, नागपुर
श्री स्वराज जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र महावीर, सनावद

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001310100017881 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

अध्यक्षीय संबोधन	3
संपादकीय	5
महामंत्री निवेदन	7
तीर्थ के विकास को पूरा करेंगी तीर्थक्षेत्र कमेटी की अध्यक्षा सरिताजी	14
श्रवणबेलगोला में तीर्थक्षेत्र कमेटी की नवनिर्वाचित अध्यक्षा	19
सुसंस्कृत समाज के लिए संस्कार की आवश्यकता: सौ. सरिता जैन	22
जैन तीर्थक्षेत्र वन्दना: प्रकृति और स्वरुप	29
राजस्थान अंचल प्रतिवेदन	33
आतंकवाद से पीड़ित विश्व और भगवान महावीर	35
एलाचार्य प्रज्ञसागरजी की राष्ट्रपति भवन में आहारचर्या	37
आचार्य विमलसागर ऐसे रत्नाकर है, जिनमें अनेक नदियाँ समाहित है	38
महावीरजी का वार्षिक लक्खी मेला-2016	40

तीर्थंकर श्री 1008 महावीर भगवान, अहारजी क्षेत्र

संसार में सबसे बड़ा पाप रात्रि भोजन है और सबसे बड़ा पुण्य प्रभु की पूजा है

महामंत्री निवेदन

सत्य, अहिंसा और विश्वशांति के अग्रदूत, हम सभी के आराध्य वर्तमान शासन नायक तथा २४ वें तीर्थंकर श्री १००८ भगवान महावीर स्वामी का २६१५ वां जन्मकल्याणक महोत्सव, संपूर्ण विश्व को ''जियो और जीने दो'' का संदेश देने वाले शांति, प्रेम एवं करुणा का ज्ञानदीप सबके घर में प्रज्ज्वलित हो, ऐसी भूमिका रखनेवाले हमारे आराध्य प्रभु को कोटि कोटि नमन एवं आप सभी को जन्मजयंति की मनःपूर्वक हार्दिक शुभकामना।

हम सभी का सौभाग्य है कि अभी भी इस धरती पर धर्म का अस्तित्व बना हुआ है। भिन्न भिन्न क्षेत्र में अपने लक्ष्य को लेकर अनेक व्यक्ति कार्य कर रहे हैं। कार्य करते हुये, सिध्दांत की रक्षा करने की व्यवस्था से हम सभी शक्ति की अपेक्षा, गुणों से अधिक संपन्न हैं।

अहिंसा, सत्यता, अचौर्य, सुशीलता व अपरिग्रह यही गुण हमारी शक्ति हैं। इस मार्ग से हम चलेंगे तो हम निश्चित यह कह सकते हैं कि यह मार्ग भगवान महावीर का है। जब तीर्थंकर भगवान का जन्म होता है, तो सभी पथ उज्ज्वल बन जाया करते हैं, किन्तु संसारी व्यक्ति को अपना मार्ग स्वयं बनाने की आवश्यकता पड़ती है। हम सभी भगवान की उपासना करते हैं, यदि सत्य के मार्ग का लक्ष्य लेकर हम आगे बढ़ते हैं तो यह उपासना सार्थक होगी।

हम यदि सत्य को स्वीकार करते हैं तो मेरा यह मानना है कि हमारे कोर्ट - कचहरियों में जो अनेक मुकदमे चल रहे हैं उसकी आवश्यकता ही नहीं रहेगी। आपस में मिलकर हम सभी हमारे अहं को त्यागकर, सत्य के साथ भगवान की स्तुति वंदना करते हैं तो निश्चित ही हमारी उपासना सार्थक होगी।

भगवान महावीर के मार्ग को यदि हमें अपनाना है, उनके समान यदि हमें बनना है तो उनकी पूजा, अर्चना, वंदना, आरती करते समय अपने आप को भूलना पड़ेगा, अपने आप को मिटाना पड़ेगा, जिसको मोह है, अहं है, स्वार्थ की भावना है, असत्य का सहारा है, तो इस अवस्था मे हमें त्रिकाल मे भी सुख शांति प्राप्त नहीं होगी। आज हम इतने स्वार्थी हैं कि भगवान महावीर के तत्त्वज्ञान को ही भूल गये हैं। हम जोरों से प्रभावना भी करते हैं, दिखावा भी करते हैं किन्तु उनके द्वारा प्रतिपादित सिध्दांत को भूलकर, सत्य को त्यागकर, कार्य करते हैं जिनको सुधारने की आवश्यकता है। सुधार हम सभी ला सकते हैं, इसके लिए विवेक के साथ चलना होगा।

भगवान महावीर स्वामी के जन्मकल्याणक महोत्सव के निमित्त से आपसी प्रेम, भाईचारा, वात्सल्य के साथ सभी भूलों को सुधारकर सत्पथ पर चलने के लिए हम सभी तत्पर हों, इसी आशा एवं विश्वास के साथ, सादर जय-जिनेन्द्र।

आपका

संतोश जैन (पेंढारी)

महामंत्री

रिश्तों में जब झूठ बोलने की आवश्यकता महसूस हो तो समझ लो परेशानी आपका दरवाजा खटखटा रही है

दिनांक 05 मार्च 2016, प.पू. आचार्य श्री देवनंदिजी महाराज से आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्राप्त करते हुये (णमोकार तीर्थ – जि. नाशिक)

श्रीमती सरिता जैन अध्यक्षा एवं श्री संतोष जैन महामंत्री का दि. जैन समाज जबलपुर द्वारा स्वागत

प्रतिभा स्थली – जबलपुर, प.पू. आर्यिका 105 आदर्शमती माताजी से श्रीमती सरिता जैन अध्यक्षा, श्री संतोष जैन महामंत्री, श्री कमल ठोल्या, चैन्नई श्री कोमल जैन, जबलपुर आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्राप्त करते हुये।

श्री विरेश सेठ, जबलपुर के कारखाने पर आयोजित सभा का दृश्य

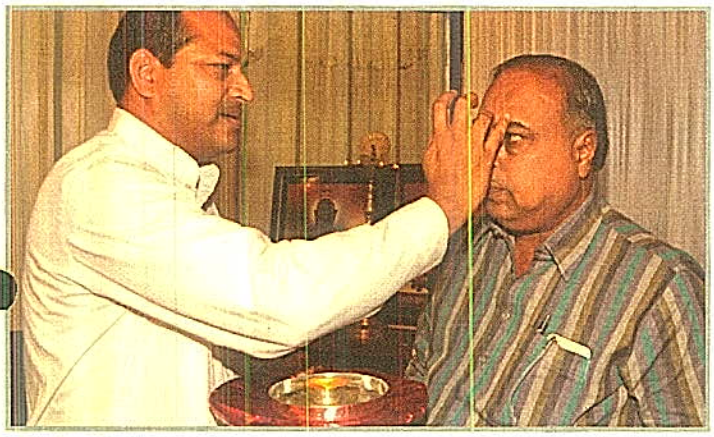

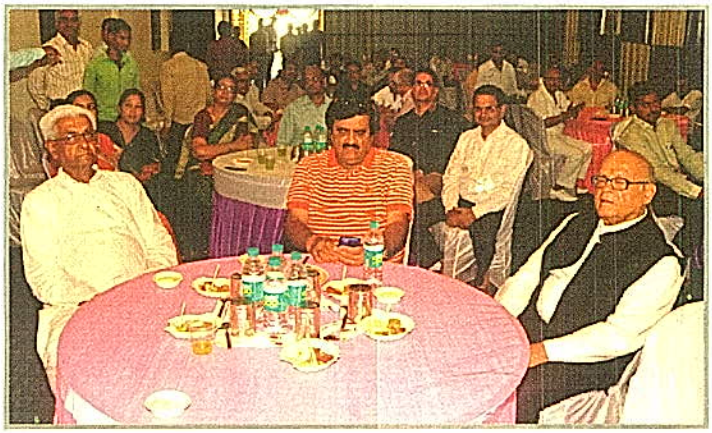

जैन धर्म में तपतीर्थ, ज्ञानतीर्थ, संयमतीर्थ आदि कहे गये हैं

श्री विरेश सेठ, जबलपुर के कारखाने पर आयोजित सभा का दृश्य

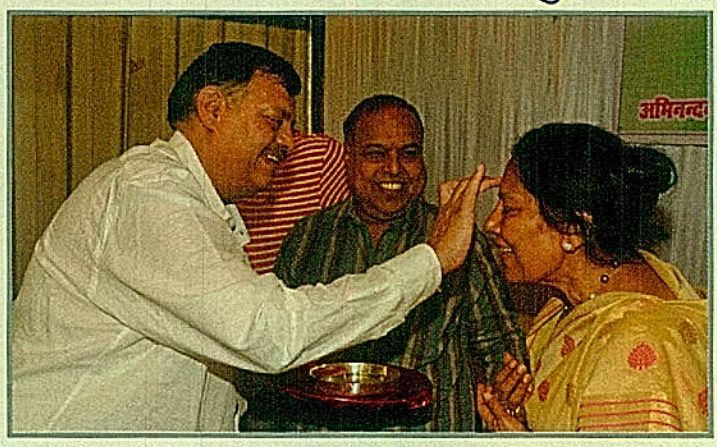

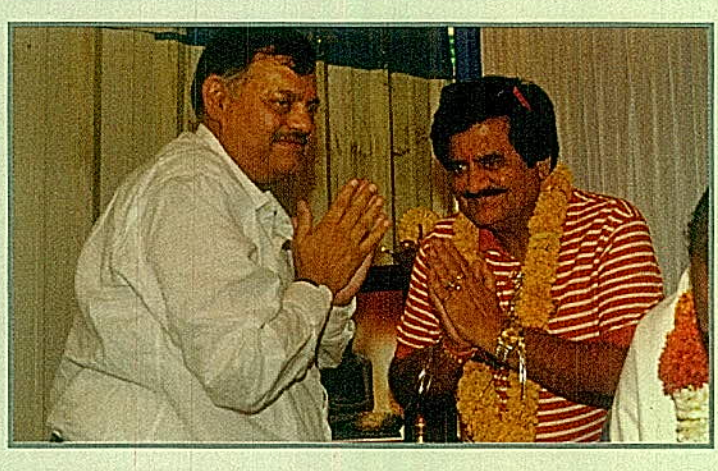

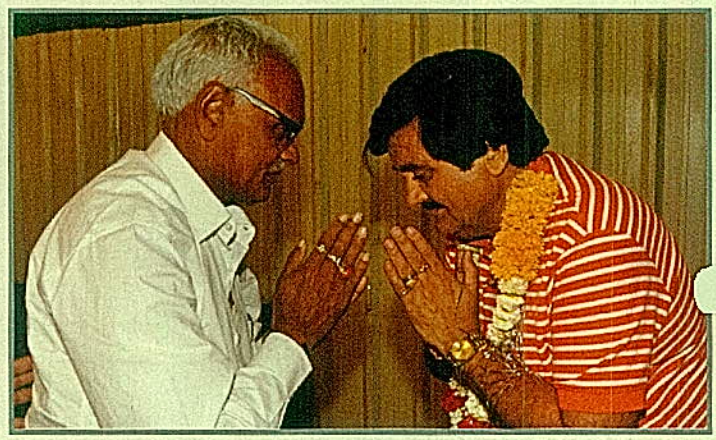

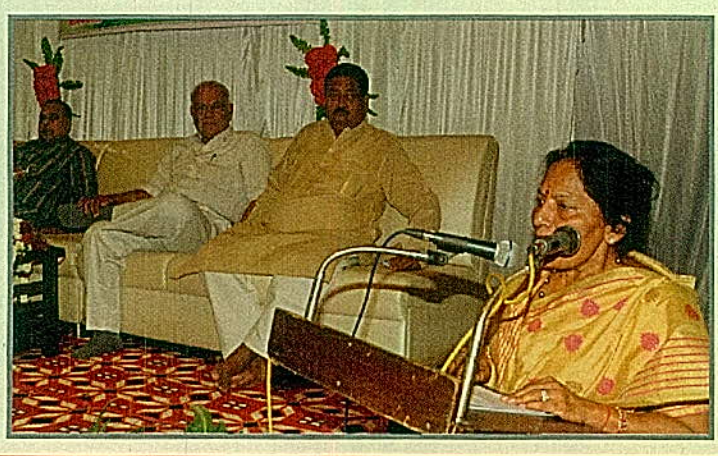

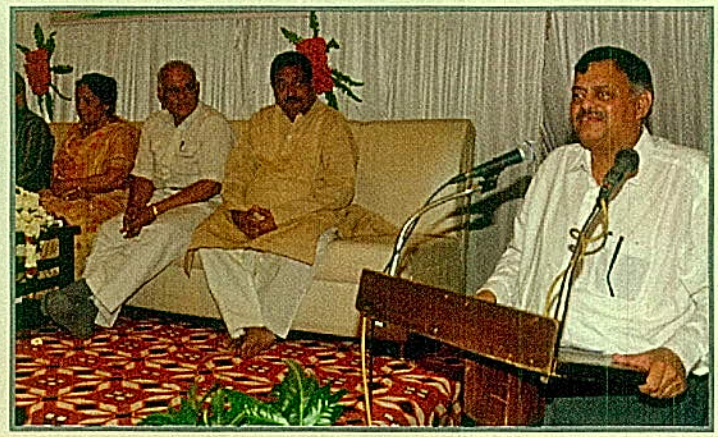

पैसे से सुख कभी खरीदा नहीं जाता, और दुःख का कोई खरीदार नहीं होता

कटंगी में प. पू. आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज इनके साथ 2 घंटे की वार्तालाप जिसमें आचार्य श्री ने तीर्थक्षेत्र कमेटी के विकास के लिये सभी पहलुओं पर मार्गदर्शन किया। बैठक में श्रीमती सरिता जैन, श्री संतोष जैन, श्री शरद जैन भोपाल, श्री विरेश सेठ, श्री कोमल जैन जबलपुर, श्री कमल ठोल्या चैन्नई आदि मान्यवर उपस्थित थे।

मीठा बोलने वाला कभी हितैषी नहीं होता, नमक की तरह कड़वा ज्ञान देने वाला ही सच्चा हितैषी होता है

कटंगी, जबलपुर दौरे की झलकियाँ

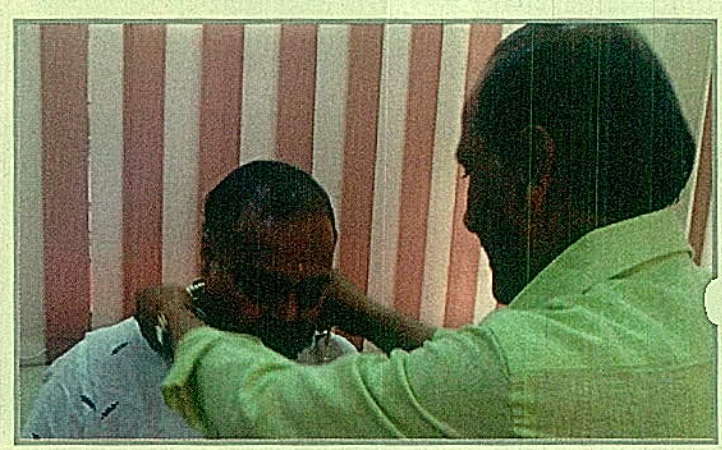

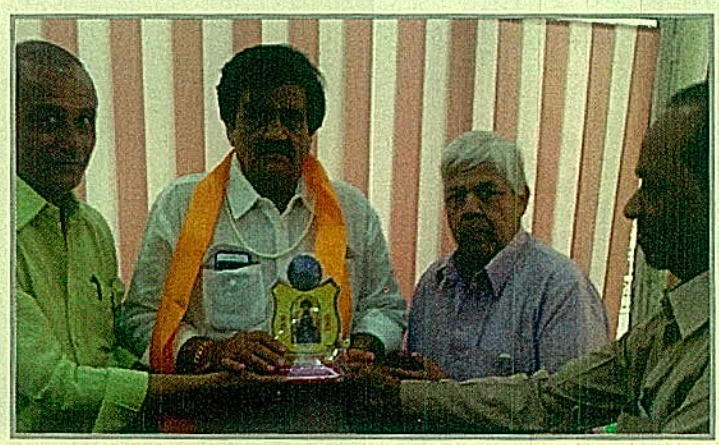

जिसमें जिनदेव विराजमान हैं, वह तीर्थ है (उत्तरपुराण 54, 5)

अतिशय क्षेत्र पनागर (जबलपुर) के दौरे की झलकियां

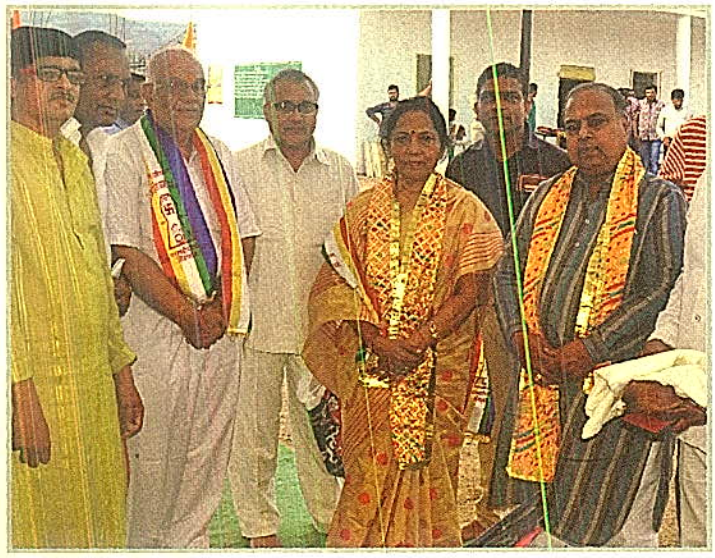

तीर्थ दो प्रकार के हैं - द्रव्य तीर्थ (सम्मेदशिखर, चम्पापुरी, पावापुरी आदि) और भावतीर्थ (सम्यग्ज्ञान, सम्यक तप, संयम आदि) (मूलाचार, गा. 560)

तीर्थ के विकास को पूरा करेंगी तीर्थक्षेत्र कमेटी की अध्यक्षा सरिताजी

मध्यांचल तीर्थ थुबोनजी कमेटी ने किया सम्मान

अशोकनगर, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीथक्षेत्र कमेटी की नव निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के.जैन, चेन्नई एवम् महामंत्री संतोष जी पेंढारी, नागपुर परम् पूज्य सन्त शिरोमणि आचार्य श्री विद्यसागर जी महाराज के आशीर्वाद एवम् चर्चा हेतु कटंगी पधारी। परम पूज्य गुरुदेव से चर्चा उपरांत तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल के महामन्त्री अरविन्द सिंघई मक्कु एवम् श्री थूबोन क्षेत्र कमेटी के मंत्री विनोद मोदी, प्रचार मंत्री विजय धुर्रा, निर्माण मंत्री विपिन सिंघई, सौरभ बांझल द्वारा सम्माननीय अतिथियों का सम्मान किया गया। समारोह मे युवा वर्ग के संरक्षक व थूबोनजी कमेटी के प्रचार मंत्री विजय धुर्रा ने कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटी के 114 वर्षों के इतिहास में पहली बार किसी महिला को राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया गया है। हम सब इस विश्वास के साथ आपके साथ काम करने को उत्सुक हैं कि आप कुछ नये कीर्तिमान स्थापित करेंगी। हमारे तीर्थों का विकास हो यही संकल्प हम सब का होना चहिये। अतिशय क्षेत्र थुबोन का आप शीघ्र दौरा करेंगी। परमपूज्य मुनिपुंगव सुधासागरजी महाराज के आशीर्वाद व मार्गदर्शन में तीर्थ पर विकास कार्य चल रहे हैं और हम विकास के कार्यों को आगे भी जारी रखेंगे। धुर्रा ने कहा कि निकट ही प्राचीन तीर्थ गोलाकोट पचराई तीर्थ पर मेला महोत्सव में आप पधारेंगी।

मध्यांचल कमेटी के संयुक्त मंत्री विनोद मोदी ने कहा कि देश में बुंदेलखण्ड के तीर्थक्षेत्रों का अलग स्थान है। और विकास के साथ जीर्णोद्धार की आवश्यकता है जिसे आप के नेतृत्व में हम पूरा करेंगे। महामंत्री अरविंद सिंघई ने कहा कि मध्यांचल सबसे बड़ा क्षेत्र है यहां देश भर से यात्रियों के आने का तांता लगा रहता है। यत्रियों की सुविधा के साथ क्षेत्रों के विकास के लिये बहुत काम होना बाकी है। अनेक क्षेत्र बहुत पिछड़े हैं जिनके जीर्णोद्धार की सख्त आवश्यकता है। धन अभाव के कारण वहां कार्य नहीं हो पा रहा है जिसे पूरा किया जाना है। नव नियुक्त अध्यक्ष उत्साही है, ऊर्जावान है आपके मार्गदर्शन में तीर्थ आगे बढ़ेंगे। मध्यांचल के विस्तृत दौरे के लिये हम आपको आमंत्रित करते हैं। आप पधारकर हमें अनुगृहीत करेंगी एवम् क्षेत्रों के विकास नवनिमर्माण की रूप रेखा के साथ जीर्णोद्धार में सहभागिता देंगी। तीर्थक्षेत्र कमेटी के नव नियुक्त महामंत्री संतोष पेण्ढारी ने कहा कि आज तीर्थ के विकास व जीर्णोद्धार की आवश्यकता है जिसे हम सब मिलकर पूरा करेंगे। प पूज्य आचार्य भगवन विद्यासागर जी महा मुनिराज के आशीर्वाद को प्राप्त करने हम सब लोग आज यहां आये हैं। आचार्य भगवन का हम सब को आशीर्वाद मिला है। यह ऊर्जा हमे क्षेत्रों के विकास के लिये प्रेरित करेगी। राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिताजी ने कहा कि मेरा सौभाग्य है कि मुझे तीर्थों की सेवा करने का अवसर मिला है। और हम इसको पूरी लगन से करेंगे। हम लोग सबसे पहले आचार्य भगवन विद्यासागर जी महा मुनिराज के चरणों मे इसीलिये आये हैं कि उनका मार्गदर्शन व आशीर्वाद प्राप्तकर कार्य को आगे बढायें। इस में आप जैसे नौजवानों की आवश्यकता होगी। आप सब भी अपना पूरा सहयोग प्रदान करेंगे।

इस अवसर पर मुंगावली जैन समाज के महामंत्री संजय सिंघई, चन्द्रप्रभु जिनालय के अध्यक्ष चन्द्रेश मोदी, रोहित सिंघई रिंकु जैन ने भी अपनी बात रखी।

संतो हि हितभाषिणः (उत्तरपुराण, पर्व 70, श्लोक 325) । अर्थ- साधु-संत आत्महित का उपदेश देते हैं ।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सरिता एम.के जैन एवं महामंत्री श्री संतोष जी पेंढारी का दिनांक 12 एवं 13 मार्च जयपुर आगमन पर हुये कार्यक्रमों की विस्तृत प्रतिवेदन

दिनांक 12/3/2016 को श्रीमती शान्ती देवी जी बड़जात्या हाल भट्टारक जी की नसिया में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल की सभा अध्यक्षा जी अनुमति से प्रारम्भ हुई।

सर्वप्रथम सभी ने खड़े होकर तीन बार णमोकार मन्त्र का वाचन कर सभा प्रारम्भ की। सभा में प्रमुख रुप से भारतवर्ष दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के. जैन एवं महामंत्री श्री सन्तोष जी पेण्ढारी व दक्षिणांचल के अध्यक्ष श्री कमल जी ठौलिया उपस्थित थे। णमोकार वाचन के तत्पश्चात बाहर से हमारे पधारे राष्ट्रीय पदाधिकारियों का तिलक, माला, शाल, बुक्के व पगड़ी पहनाकर बारी-बारी से सम्मान किया गया। तीर्थक्षेत्र कमेटी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं परम शिरोमणि संरक्षक श्री एन. के. सेठी जी भी मौजूद थे, उनका स्वागत सम्मान किया गया उसके पश्चात राजस्थान अंचल के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र के गोधा जी ने अपना स्वागत उद्बोधन देते हुए बाहर से पधारे आगन्तुक अतिथियों का, सभा में विराजे गणमान्य महानुभावों का एवं सभी पदाधिकारियों का अपने वचनों से स्वागत अभिनंदन किया एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष जी को विश्वास दिलाया कि राजस्थान अंचल आपके हर कार्यों में आपका कन्धे से कन्धा मिलाकर साथ रहेगा।

स्वागत उद्बोधन के पश्चात आगन्तुक सभी महानुभावों ने बारी-बारी से अपना परिचय प्रस्तुत किया। बाद में महामंत्री श्री कमल बाबू जैन ने विगत वर्षों में राजस्थान अंचल द्वारा किये गये कार्यों की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। उसमें उन्होने क्रमशः राजस्थान अंचल के चुनाव के पश्चात हुए कार्यों के विवरण में गोम्मटगिरी मे आयोजित क्षेत्रीय सभा, चांदखेडी, केशोराय पाटन एवं सरवाड की यात्राए, धर्म बचाओ आन्दोलन में सक्रिय भूमिका श्री सम्मेदशिखर जी में आयोजित मीटिंग, श्री गिरनार राष्ट्रस्तरीय एक्शन कमटी की मीटिंग के आयोजन व आतिथ्य एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जी जैन की राजस्थान यात्राओं के विवरण का संक्षिप्त लेखा जोखा सदस्यों के सम्मुख रखा एवं अन्य प्रतिदिन होने वाले धार्मिक व सामाजिक कार्यो में तीर्थ क्षेत्र कमेटी द्वारा लगातार दी जाने वाली सहभागिता की जानकारी दी।

गतिविधियो की जानकारी के पश्चात सर्वप्रथम महामंत्री जी पेण्ढारी ने आगे किये जाने वाले कार्यों के सन्दर्भ में जानकारी देते हुए सभी के सहयोग करने का आहवान किया गया। श्री राजेन्द्र के. शेखर, श्री खिल्लीमलजी जैन, श्री हेमन्त जी जैन व अशोक जी जैन नेता ने भी अपने सुझाव रखे। उसके बाद राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम. के. जैन ने अपने उद्बोधन में तीर्थों के विकास एवं संवर्धन में सभी पुरुषों का, महिलाओं का एवं विशेष रूप से युवाओं का सहयोग चाहा एवं तीर्थो के विकास के साथ समाज में आई कुरीतियों को दूर करने पर भी जोर दिया। उन्होंने इस बात से भी सचेत किया कि हम आगे होकर अनर्गल प्रचार करके भावना न भड़काएं जिससे समस्याएं बढ़ती हैं। जो कार्य सम्मानजनक समझौतों से हो सकता है, उन्हें पहले किया जाए अन्यथा कानून तो है ही। हम सभी पंथवाद से दूर रहकर मिलकर सहयोग करे इसी की मुझे आपसे अपेक्षा है। उन्होंने सभी के सहयोग की अपील की इसके बाद पूर्व अध्यक्ष श्री एन. के. सेठी जी ने अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर उद्बोधन में यही कहा कि हम विवादों से बचकर रहें, कानून की अनुपालना करें। उन्होने नवनिर्वाचित अध्यक्षा जी की कार्यक्षमता की प्रशंसा करते हुए उन्हें बधाई दी।

अन्त में महामंत्री जी द्वारा सभी को धन्यवाद दिया गया व सभी को वात्सल्य भोज के लिए आमंत्रित किया।

12 मार्च को प्रातः 8.30 बजे :- श्रीमती सरिता एम. के. जैन अध्यक्ष श्री सन्तोष जी पेंढारी (महामंत्री) एवं दक्षिणांचल के अध्यक्ष कमल जी ठोलिया के साथ श्री सुपार्श्व गार्डन सिटी बडके बालाजी पर विराजित आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज संघ के दर्शनार्थ पहुंचे व आचार्य श्री का आशीर्वाद लिया।

दोपहर 2.30 बजे:- मुनिश्री प्रमाण सागर जी महाराज के दर्शनार्थ रवानगी। अतिशय क्षेत्र रवासा के मन्दिर के दर्शन, स्वागत सम्मान व चाय लेकर रवाना हुये। कोछार होते हुए, दुदुवॉ गांव में मुनि श्री प्रमाण सागर जी, मुनि श्री विराट सागर जी के दर्शन कर वार्ताएं व आशीर्वाद लिया। बाद में शंका समाधान के कार्यक्रम में श्री सरिता जी, श्री सन्तोष जी पेंढारी व कमल जी ठोलिया का स्वागत हुआ।

दिनांक 13/3/2016 :- को प्रातः 9.00 बजे श्री पदमपुरा जी के दर्शनार्थ गये।

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
स्व. दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

1970 ESTD. IN THE SERVICE OF NATION

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

धम्मो दयाविसुद्धो (आ.कुन्द-कुन्द : बोधपाहुड, गा.25) । अर्थ- शुद्ध भाव से युक्त दयाधर्म हैं।

जयपुर में राजस्थान अंचल द्वारा आयोजित सभा का दृश्य

जिसमें जिनदेव विराजमान हैं, वह तीर्थ है (उत्तरपुराण 54, 5)

जयपुर में राजस्थान अंचल द्वारा आयोजित सभा का दृश्य

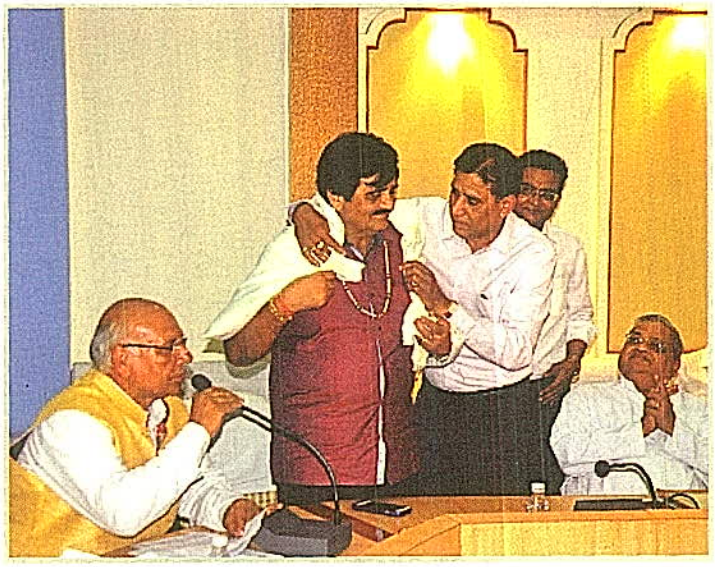

णिग्गंथ वीयराया जिणमग्गे एरिसा पडिया । अर्थ- जिन प्रतिमा निर्ग्रन्थ, वीतराग होती है (बोधपाहुड़, गा.10)

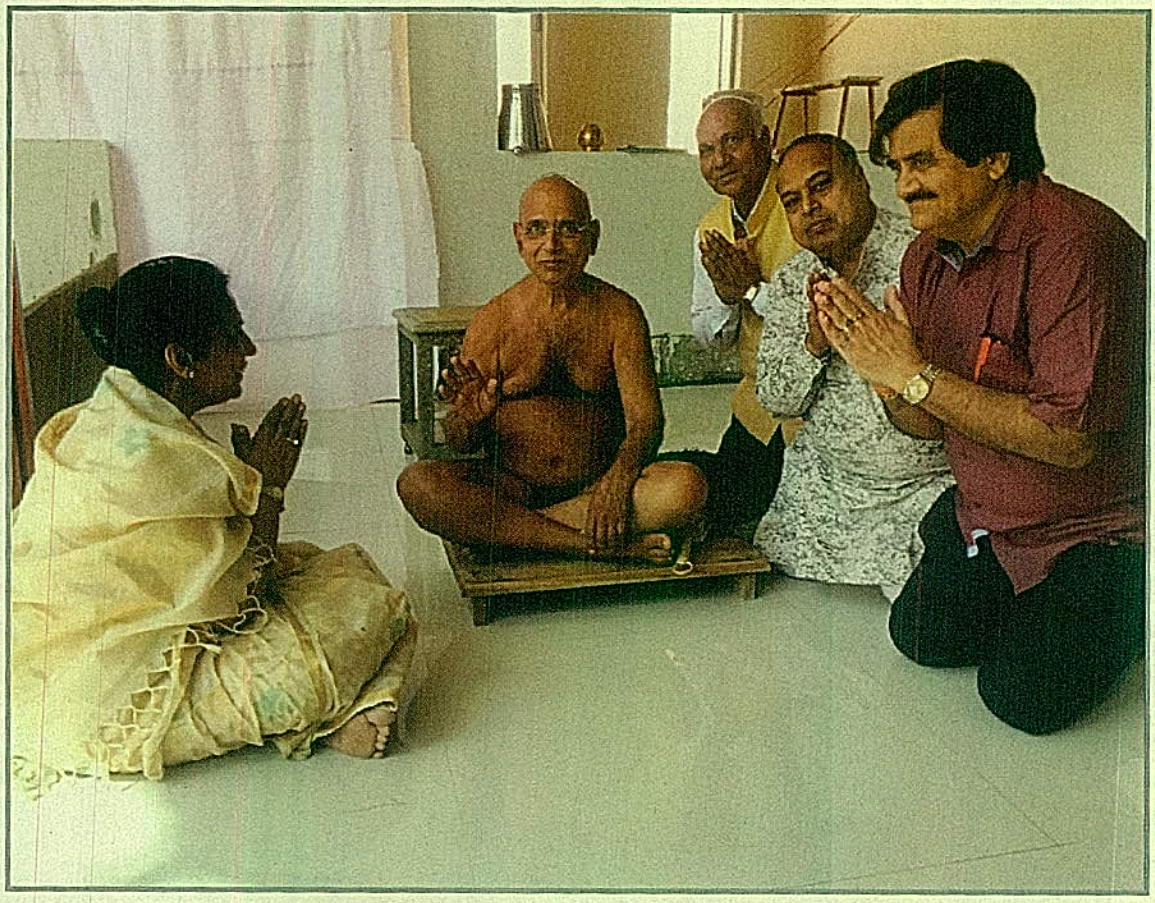

प.पू. आचार्य श्री वर्धमान सागरजी महाराज से श्रीमती सरिताजी जैन अध्यक्ष, श्री संतोष जैन महामंत्री, श्री कमल ठोल्या चैनई अध्यक्ष तामिलनाडु अंचल आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्राप्त करते हुये । (बडके बालाजी जयपूर)

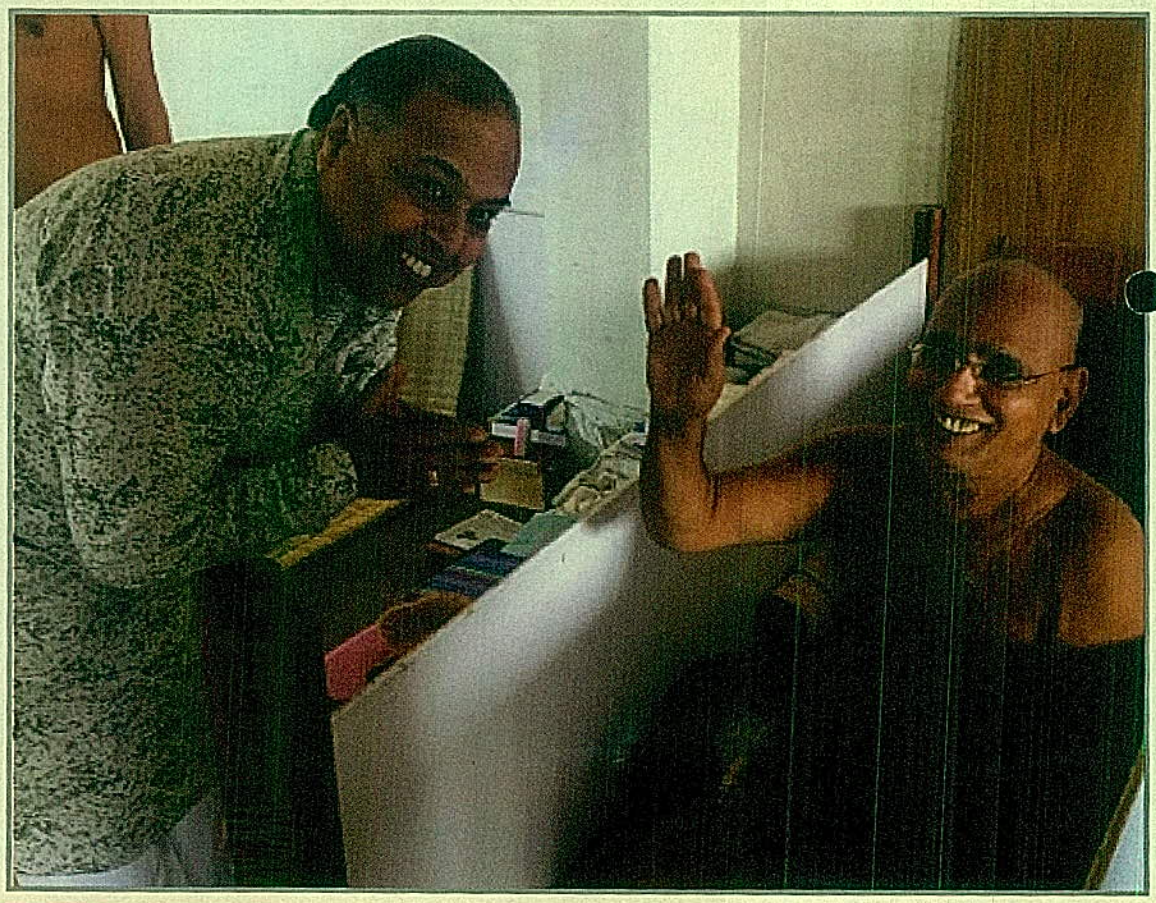

प.पू. आचार्य श्री वर्धमान सागरजी महाराज से श्री संतोष जैन महामंत्री आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्राप्त करते हुये । (बडके बालाजी जयपुर)

बहुत नहीं बहुत बार पढ़ने से ज्ञान का विकास होता है।

श्रवणबेलगोला में तीर्थक्षेत्र कमेटी की नवनिर्वाचित अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के.जैन का अभिनन्दन

भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी की नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता जैन का श्रवणबेलगोल की एस.डि.जे.एम.आई. मैनेजिंग कमेटी ट्रस्ट ने अभिनंदन किया तथा तीर्थक्षेत्र कमेटी की यहां 25 मार्च को सम्पन्न प्रथम बैठक में उनके सभी पदाधिकारियों का तिलक एवं शॉल से अभिनंदन किया। कर्मयोगी भट्टारक श्री चारुकीर्ति स्वामी जी ने समस्त पूज्य आचार्य वृंद को प्रणाम, आर्यिकाओं को वंदामि, त्यागियों को विनम्रता पूर्वक आदर देते हुए, श्रवणबेलगोला की पवित्र भूमि की विन्ध्यगिरि में विराजमान बाहुबलि स्वामी के चरणों में वंदन करते हुए, प्रथम भट्टारक श्री नेमिचन्द्र जी को प्रणाम करते हुए, तीर्थक्षेत्र कमेटी के विकास में श्री माणिकचंद सेठ, सर सेठ हुकुम चंद जैन, इन्दौर श्री भागचन्द सोनी, अजमेर श्री एन. के. सेठी, जयपुर श्री आर. के. जैन, मुंबई तथा तीर्थों की, समाज की सेवा करते हुए अनेक पदों पर रहते हुए उन पदाधिकारियों का स्मरण करते हुए उन्होंने श्रवणबेलगोला के विकास के महत्वपूर्ण क्षणों को याद किया। साहू शांति प्रसाद जी को याद करते हुए कहा कि जब वे यहां आए तो भट्टारक जी मात्र 19 वर्ष के थे। उस समय मठ के मंदिर में गरीबी छाई थी। उन्होंने यहां मीटिंग की और कहा कि आपको चिंता करने की कोई जरूरत नहीं, हम सब आपके साथ हैं। साहू जी का वर्चस्व बढ़ा था, उनका खूब सहयोग रहा। उन्होंने यहां के विकास के लिये जो मास्टर प्लान बनाकर दिया, उसके अनुरूप चलते हुए आज श्रवणबेलगोला का विकास आपके सामने हैं। उनके बाद आचार्य श्री विद्यानंद जी यहां पधारे, भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी आई, जिन्होंने चांदी का नारियल बाहुबलि के चरणों में समर्पित किया। श्रेयांस प्रसाद जी, साहू अशोकजी, साहू रमेश चंद जी, सेठी जी, आर.पी. जैन साहब, सुधीर जैन कटनी, पंकज जैन (पारस चैनल) सभी का खूब सहयोग रहा। इन सबके कार्यकाल में तीर्थक्षेत्र कमेटी ने चहुंमुखी विकास किया। अध्यक्ष बदलते रहे लेकिन कार्यालय का कार्यभार श्री उमानाथ दुबे ने जिम्मेदारी से संभाला। सरिता एम.के. जैन के अध्यक्ष चुने जाने को स्वामी जी ने एक परिवर्तन के रूप में सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि आज कमेटी के परिवर्तन की दिशा है, किसी महिला का इस पद पर आना बहुत बड़ी गरिमा की बात है। सरिता जी को हम अम्मा के नाम से पुकारते हैं। वे कर्नाटक के प्रत्येक कार्यक्रम में आती हैं। आज वे हमारी समाज की महिला रत्न, दान रत्न, 108 मंदिरों का जीर्णोद्धार, क्षेत्र के सभी कार्यों में आगे खड़े होकर कार्य करती हैं। कार्य, श्रद्धा, आराधना, त्यागियों से लगाव, महिला जागरूकता के कार्य करती हैं। सरिता जी ने अरिहंत गिरी (प्राचीन चतुर्थकाल के तीर्थ) में स्कूल-कॉलेज-गौशाला हर प्रकार से आगे आकर कार्य किया। साहू अशोक जी ने इन्हें राष्ट्रीय स्तर पर पहचाना, उन्हें शाश्वत ट्रस्ट का ट्रस्टी बनाया। उन्होंने ऐसे हीरे की परख की। धर्मानुरागी महेन्द्र जी - सरिता जी ने जो अच्छे कार्य किये, उस कारण ही आज इतने गरिमामय पद को सुशोभित कर रही हैं। श्री संतोष पेंढारी जी ने महत्वपूर्ण महामंत्री पद संभाला। आप सभी मिलकर एक भावना से कार्य करेंगे, तेरापंथी-बीसपंथी का कोई भेद न रखते हुए अब तक हुये कार्यों से आगे निकल तीर्थों का जीर्णोद्धार, सुरक्षा, यात्रियों की सुविधा का ध्यान रखेंगे। आपको आचार्य विद्यासागरजी, आचार्य विद्यानंदजी, गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी का आशीर्वाद प्राप्त है। श्रीमती सरिता जैन ने स्वामी चारूकीर्ति भट्टारक जी का वंदन करते हुए इस आयोजन के लिए श्रवणबेलगोला कमेटी का हार्दिक धन्यवाद दिया। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद पर आसीन होते ही उन्होंने आचार्य श्री विद्यानंद जी, आ. विद्यासागरजी, आ. श्री वर्धमान सागरजी, मुनि श्री प्रमाण सागरजी, मुनि श्री सौरभ सागरजी, आर्यिका श्री ज्ञानमति माताजी के दर्शन किये। सभी आचार्य, साधुवृंदों को त्रिबार नमोस्तु करते हुए उन्होंने कहा कि मैं आप सभी की आभारी हूं जिनके आशीर्वाद से मैं तीर्थों के संरक्षण, संवर्द्धन, विकास के साथ मंदिरों की सुरक्षा के विषय में गंभीरता पूर्वक काम करूंगी। आशा है हम एकता की भावना से आगे बढ़ते रहेंगे। इस अवसर पर तीर्थक्षेत्र कमेटी की नई सम्माननीय सदस्या अपराजिता जैन (सान्ध्य महालक्ष्मी, दिल्ली, सुपुत्री श्री किशोर जैन) ने भक्ति गीत के साथ सरिता जी को मुकुट पहनाकर अभिनंदन किया। तत्पश्चात् शाश्वत ट्रस्ट की बैठक में श्री छीतरमल जी पाटनी एवं श्री किशोर जैन ने ट्रस्ट के प्रमुख मुद्दों को अध्यक्ष के समक्ष रखा। 26 मार्च को चन्द्रगिरी पर्वत से मठ मंदिर तक सरिता एम.के. जैन को खुली बग्गी में बैठाकर भव्य जुलूस निकाला गया। यह जुलूस अभिनंदन सभा में परिवर्तित हो गया जिसमें अध्यक्षा समेत तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी सर्वश्री संतोष जैन पेंढारी (महामंत्री), नीलम अजमेरा (उपाध्यक्ष), विनोद कुमार बाकलीवाल (मंत्री), वीरेश सेठ (मंत्री), अंचल अध्यक्ष - डी.आर. शाह (कर्नाटक), विनोद डोडनवार (कर्नाटक मंत्री), महाराष्ट्र अंचल के प्रमोद कासलीवाल (अध्यक्ष), देवेन्द्र काला (मंत्री), तमिलनाडु अंचल के कमल जी ठोलिया (अध्यक्ष), दिनेश सेठी (मंत्री) आदि स्टेज पर विराजमान थे। श्री नलिन शास्त्री जी (बोध गया) ने सरिता जी का परिचय प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों का स्वागत सम्मान हुआ। सरिता जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि सन् 2018 के महामस्तकाभिषेक में स्वामी जी जो भी कार्य उन्हें सौंपेंगे, वह उन्हें तन्मयता से पूर्ण करेंगी। तत्पश्चात् महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी ने अध्यक्षीय भाषण में स्वामी जी का आभार प्रकट किया तथा तीर्थों के संबंध में विचार प्रकट किये और योजनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने जल्द ही तीर्थक्षेत्र कमेटी की नई वेबसाइट लांच करने की घोषणा की। स्वामी जी के आशीर्वचन हुए। अंत में मंत्री श्री विनोद बाकलीवाल ने सभी आगुंतकों का आभार प्रकट किया। उपरोक्त महानुभावों के अतिरिक्त शाश्वत ट्रस्ट के महामंत्री श्री छीतरमल जी पाटनी श्रीमती सुमती जैन पाटनी हजारीबाग, श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन, चेन्नई श्री सतीश जैन (एस.सी.जे)दिल्ली, श्री विमुक्त कुमार जैन बेंगलोर, श्री हेमचन्द्र जैन दिल्ली, श्री श्रीकिशोर जैन दिल्ली, श्री जम्बू प्रसाद जैन गाजियाबाद, श्री शितल कुमार सागरी बीजापुर, श्री अभिनन्दन आर. कुचेरी, बेलगांव, श्री राकेश कुमार जैन कोलकाता, श्री प्रवीण कुमार जैन दिल्ली (संपादक महालक्ष्मी) श्रीमती निधी जैन ठोलिया, चेन्नई, श्रीमती अंजली शास्त्री बोधगया, श्री राकेश पाटनी नागपुर, श्री खुशाल जैन सी.ए. मुम्बई, श्री राजेश जैन सी.ए. दिल्ली, श्री अनिल जमगे सोलापुर, आर. के. कटके सोलापुर, श्री अशोक कुमार सेठी बेंगलौर, श्री निहालचन्द जैन बेंगलौर आदि की उपस्थिती विशेष उत्साह वर्धक रही।

- श्री किशोर जैन
451 जागृति एन्क्लेव, दिल्ली-92

जिसमें जिनदेव विराजमान हैं, वह तीर्थ है (उत्तरपुराण 54, 5)

माननीय अधिवक्ता पूनमचंदजी जैन जयपुर इनके साथ जयपूर में केशरियाजी के मुकदमे पर विस्तृत चर्चा एवं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा श्री पुनमचंदजी जैन का स्वागत करते हुए श्रीमती सरिता जैन अध्यक्ष, श्री संतोष जैन महामंत्री, श्री कमल ठोल्या चैन्नई, श्रीमती एवं श्री रविंद्रजी बज जयपुर.

दिनांक २५ मार्च २०१६ श्री श्रवणबेलगोला मे प.पू. जगतगुरू श्री चारूकीर्ति भट्टारक महास्वामी के सान्निध्य मे भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की प्रथम पदाधिकारी परिषद, प्रबंधकारिणी समिती एवं शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर ट्रस्ट की प्रथम बैठक संपन्न, जिसमे स्वामीजी द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

श्री श्रवणबेलगोला पर चंद्रगिरी पर्वत से जैन मठ तक शोभायात्रा एवं भव्य स्वागत शोभायात्रा विशाल सभा मे परिवर्तन इसी सभा मे श्रीमती सरिता जैन अध्यक्षा इनको श्रवणबेलगोला समिती का सदस्यत्व एवं श्रवणबेलगोला कमेटी का उपाध्यक्ष पद पर स्वामीजी द्वारा मनोनीत किया गया।

श्री श्रवणबेलगोला समिति द्वारा एवं विभिन्न संस्थाओ द्वारा श्रीमती सरिताजी जैन, श्री महेन्द्र कुमारजी जैन एवं श्री संतोषजी जैन महामंत्री तथा समस्त कार्यकारिणी का सम्मान

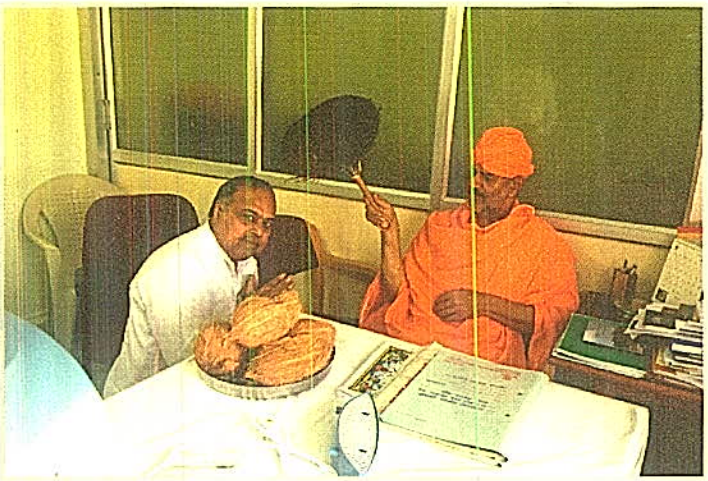

परमपूज्य स्वस्तिश्री भट्टारक चारुकीर्ति महास्वामी द्वारा आशिर्वाद प्राप्त करते हुए संतोष जैन, नागपुर

परमपूज्य स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक महास्वामी द्वारा सभी मान्यवरों को आशीर्वाद

प.पू. गणधराचार्य श्री १०८ कुंथुसागरजी महाराज द्वारा आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्राप्त करते हुवे श्रीमती सरिताजी जैन अध्यक्षा एवं श्री संतोषजी जैन महामंत्री, श्री कमल ठोल्या चैन्नई, श्री नीलमजी अजमेरा उस्मानाबाद, श्री अनिल जमगे सोलापुर, श्री बाबूभाई गांधी अकलूज, श्री सनीकभाई कोठडीया इत्यादि

श्रीमती सरिताजी जैन अध्यक्षा, श्री संतोषजी जैन महामंत्री, श्री कमलजी ठोल्या, श्री निलमजी अजमेरा, श्री अनिलजी जमगे द्वारा दि. 03/04/2016 को श्री उदगांव क्षेत्र को भेंट

श्रीमती सरिताजी जैन अध्यक्षा, श्री संतोषजी जैन महामंत्री, श्री कमलजी ठोल्या, श्री नीलमजी अजमेरा, श्री अनिलजी जमगे द्वारा दि. 03/04/2016 को श्री अतिक्षय क्षेत्र बाहुबली को भेंट

स्वस्थ ज्ञान का नाम ध्यान है और अस्वस्थ ज्ञान का नाम विज्ञान।

सुसंस्कृत समाज के लिए संस्कार की आवश्यकता: सौ. सरिता जैन

दक्षिणभारत जैन सभा एवं इचलकरंजी समाज द्वारा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तिर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारीयोंका स्वागत दिनांक ०३ अप्रैल २०१६

माजी खासदार कल्लप्पन्ना आवाडे पूर्व वस्त्रोद्योग मंत्री प्रकाशजी आवाडे इनके सान्निध्य मे श्रीमती सरिताजी जैन अध्यक्ष एवं श्री संतोषजी जैन महामंत्री इनका सम्मान दि. ०३ अप्रैल २०१६

इचलकरंजी (दि. 3 अप्रैल): समाज की परिवर्तित परिस्थितिओं में सुसंस्कृत समाज जीवन की आवश्यकता बनी हुई है। इसलिए संस्कारों की नितांत आवश्यकता है। इस प्रकार की भावना अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमिटी की अध्यक्षा सौ. सरिता जैन ने इचलकरंजी में आयोजित दक्षिण भारत जैन सभा की 117 वीं वर्षगाठ के कार्यक्रम में व्यक्त की। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष मा. श्री. रावसाहेब पाटीलजी (दक्षिण भारत जैन सभा के अध्यक्ष) थे।

दक्षिण भारत जैन सभा और उसकी शाखा दक्षिण भारत जैन महिला परिषद के 117 वी वर्षगांठ पर मान्यवरों को पुरस्कार वितरण समारंभ में सौ. सरिता जैन बोल रही थी।

सर्व प्रथम सौ. सरिता जैन ने दीप प्रज्ज्वलित किया। 114 वर्ष प्राचीन तीर्थक्षेत्र कमेटी में पहली बार महिला उम्मीदवार के रुप में अध्यक्षा चुनी गयी। इसलिए उनका शाल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र, चांदी की दीपमाला बहोत सारे शुभकामनाओं के साथ दक्षिण भारत जैन सभा की ओर से सन्मान किया गया। इसी मंचपर राष्ट्रीय महामंत्री संतोष पेंढारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नीलम अजमेराजी, कमलेश जैन, चेन्नई, अनिल जमगे का भी सन्मान किया गया।

इस मंचपर से आदर्श पिता पुरस्कार भाऊसो केटकाळे (कबनूर), आदर्श माता पुरस्कार- इंदूमती बडवे (इचलकरंजी), त्यागी सेवा पुरस्कार- जयपाल गंगाई (मजगाव), आदर्श कार्यकर्त्या पुरस्कार- डॉ. सुरेंद्र ठिकणे (मिरज), पत्रकारिता पुरस्कार- सचीन ढोले (समडोली), कायदेतज्ञ पुरस्कार-प्रेमलता शेट्टी (सांगली), युवा पुरस्कार- मिहीर गांधी (अकलुज), आदर्श युवती पुरस्कार- सौ. आशा पाटील (इ. करंजी), प्राणिमित्र पुरस्कार-मनोज ओसवाल, त्यागी सेवा पुरस्कार- सुमतीबाई पाटील (जयसिंगपुर) इनको सौ. सरिता जैन इनके करकमलों द्वारा प्रदान किया गया।

सरिता जैन ने तीर्थों की सुरक्षा, संवर्धन के बारे में तीर्थक्षेत्र कमेटी ॲक्शन प्लॅन बनाकर कार्य करेगी, अनेकों तीर्थों में अतिक्रमण है इसको हटाने का प्रयास भी करेंगे। समाज संघटन और समाजसेवा भी करते रहेंगे ऐसे व्यक्त्व्य दिया।

संतोष पेंढारीजी ने कहा कि सौ. सरिता जैन इनके नेतृत्व में सभी की सहयोग से तीर्थों की समस्या हम निपटा लेंगे। कानूनी कार्यवाही पर हम पीछे नहीं हटेंगे लेकिन जहां समन्वय व समझौता से चलेंगे इस पर शांतता से प्रश्न निपटाएं। इसी कार्यक्रम में कल्लप्पाण्णा आवाडे (दादा), प्रकाश आवाडे, माऊ.. मंत्री अपना व्यक्तत्व दे दीया, मा. श्री. रावसाहेब पाटीलजी ने सभा की अध्यक्षता की।

प्रो. डी. ए. पाटील वरिष्ठ उपाध्यक्ष सरिता जैन और सभी का परिचय दिया। सागर चौगुले चेअरमन ने प्रास्ताविक किया। बाळासाहेब केटकाळेने स्वागत किया। डॉ. अजित पाटील ने समाज को सभा के फ्युचर प्लॅन के लिए सहयोग की अपील की। आभार खजिनदार संजय शेटेने किया। वातानुकूलित घोरपडे नाट्यगृह लोंगों से खचाखच भरा हुआ था। अत्यंत शिस्तबद्ध इफेक्टिव्ह कार्यक्रम हुआ। महिला परिषद के बारे में मैं सौ. जनाजने वक्तव्य दिया।

-प्रो डी.ए. पाटील

धर्मात्मा को धर्म प्रिय होना चाहिये स्थान नहीं।

इचलकरंजी, कुंभोज बाहुबली क्षेत्र दौरे की झलकियाँ

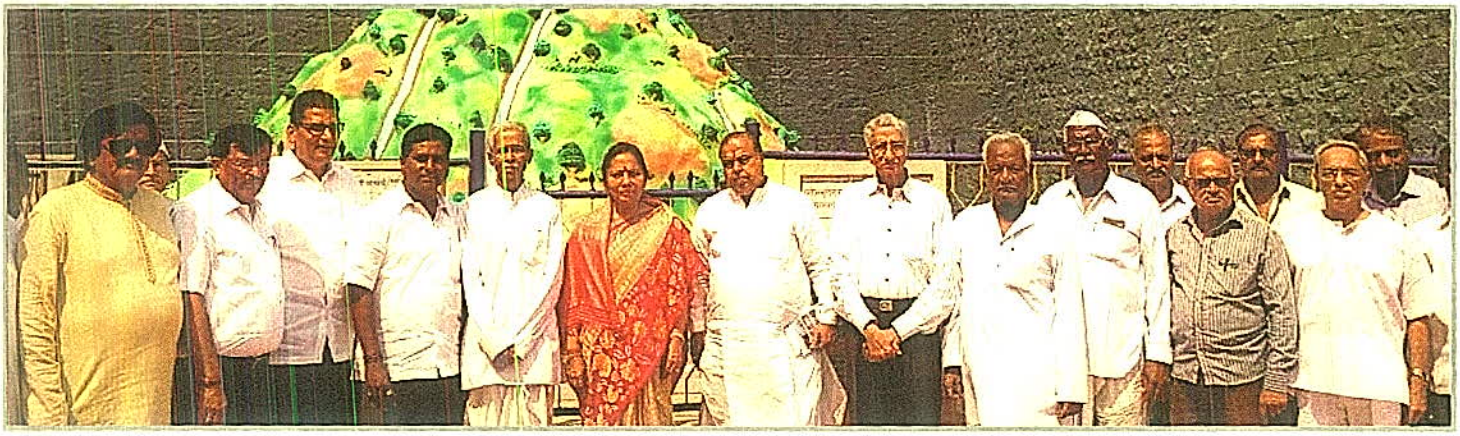

आत्मज्ञान रूप पवित्र तीर्थ है (पद्मनन्दि-पंचविंशतिका, चंद्रोदय अ 28)

कुंभोज बाहुबली, कुंथुगिरि क्षेत्र दौरे की झलकियाँ

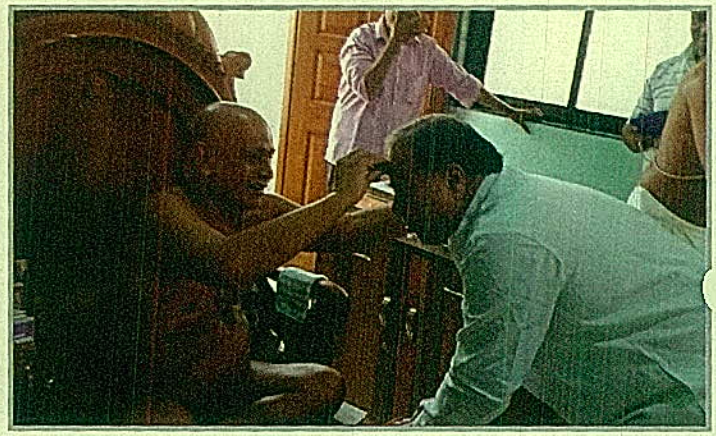

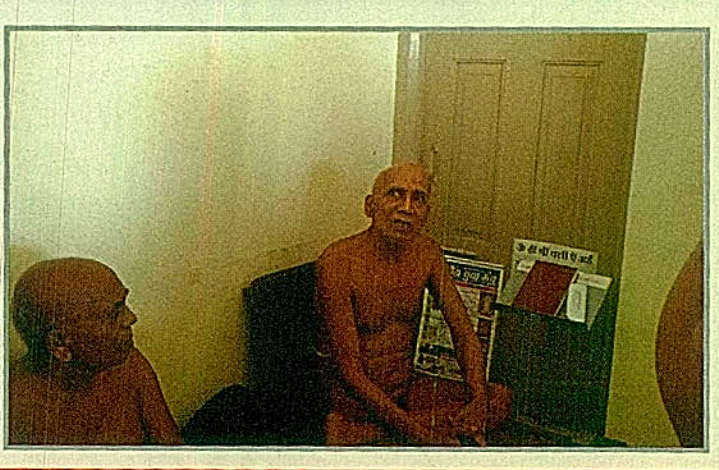

दान, पूजा, तीर्थाटन आदि यदि सम्यग्ज्ञान से सुशोभित है तो वे मुक्ति के कारण हैं (उत्तर पुराण)

दक्षिण भारत जैन सभा द्वारा नव निर्वाचित अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के.जैन का सम्मान

णिग्गंथ वीयराया जिणमग्गे एरिसा पडिया । अर्थ- जिन प्रतिमा निर्ग्रन्थ, वीतराग होती है (बोधपाहुड़, गा.10)

दयोदय क्षेत्र दौरे की झलकियाँ

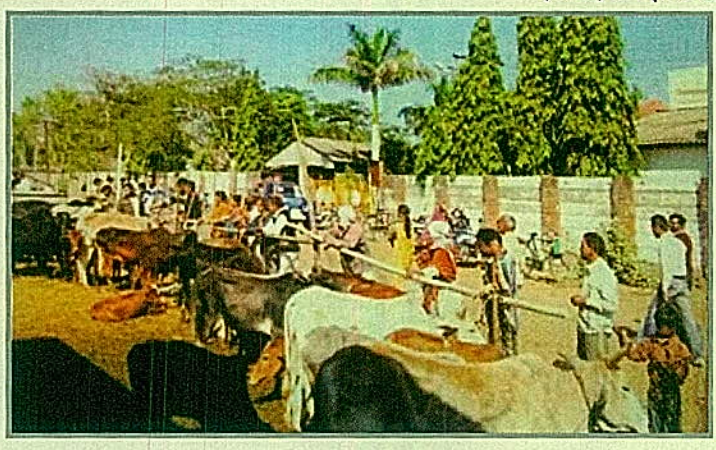

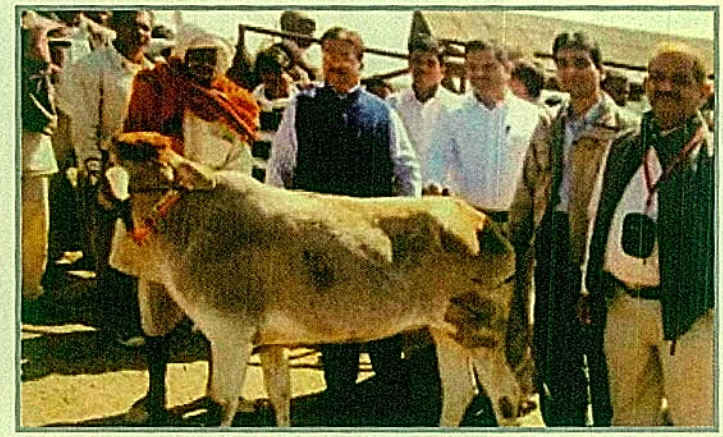

जीना सरल है, हारना जीतना सरल है, तो फिर कठिन क्या है... 'सरल' होना ही सबसे कठिन है।

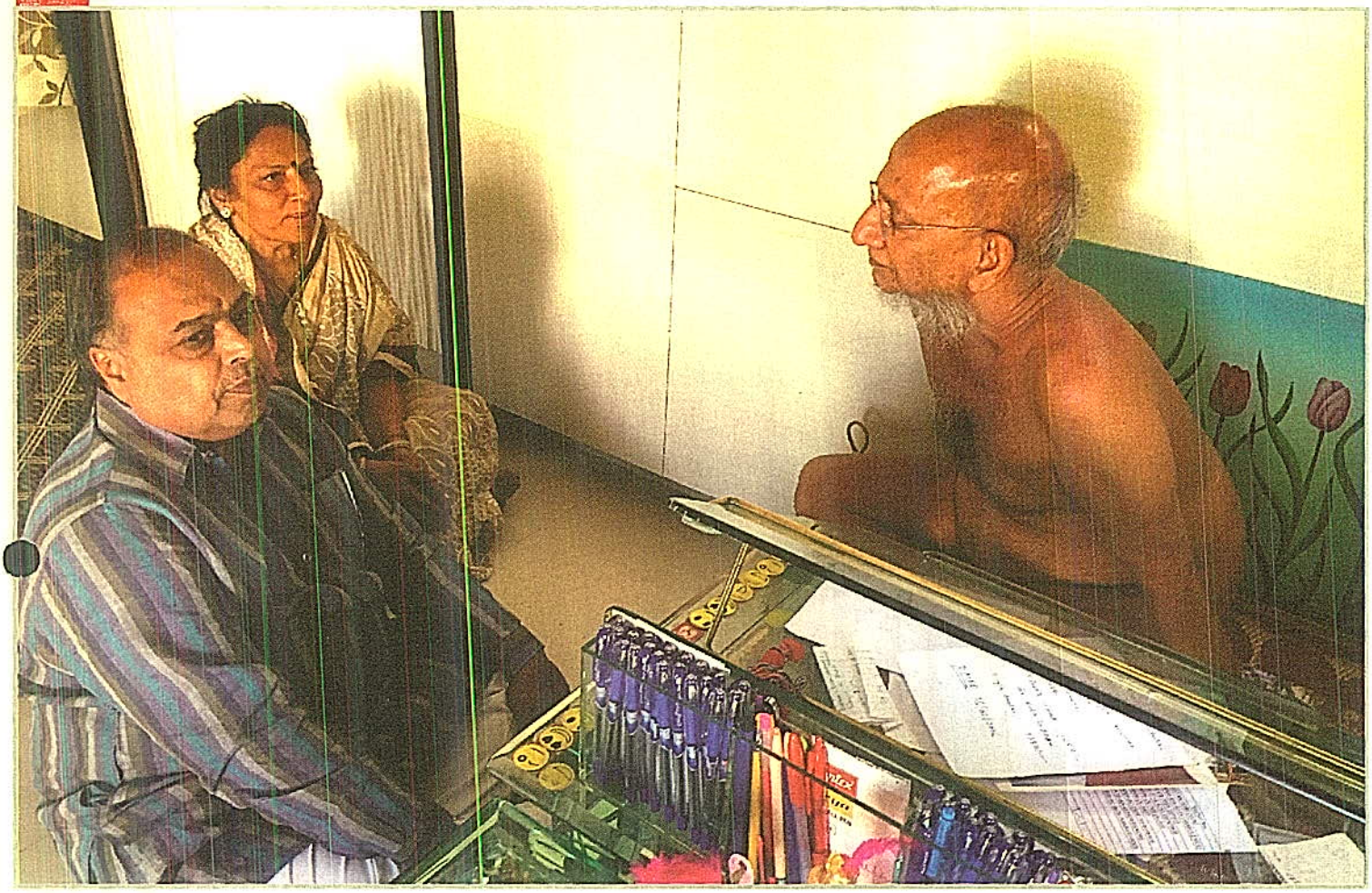

दिनांक 09/04/2016 को श्री पुष्पगिरी क्षेत्र पर आचार्य श्री 108 पुष्पदंत सागरजी महाराज से मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त करते हुये तीर्थक्षेत्र कमेटी की अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के. जैन एवं महामंत्री श्री संतोष कुमार जैन पेंढारी

राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता दीदी का इंदौर में मध्यांचल कमेटी द्वारा भव्य स्वागत

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिताजी जैन व राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोषजी पेंढारी का इंदौर में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में अध्यक्ष श्री विमल सोगानी के नेतृत्व में गौरवशाली आयोजन में भव्य स्वागत किया गया। अपने स्वागत के प्रत्युत्तर मे दीदी ने तीर्थों के विकास हेतु सभी श्रद्धालुओं से व विशेषकर महिलाओ से आगे आने का आव्हान किया। महामंत्री संतोषजी पेंढारी ने तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा किये गये कार्यों का उल्लेख करते हुये आगामी योजनाओं की जानकारी दी। मंत्री श्री शरद जैन ने व श्री संजय जैन मेक्स ने संबोधित किया, जैन अतिथि भवन में आयोजित सम्मान समारोह में इंदौर नगर की कई संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित थे प्रमुख रूप से दिगम्बर जैन समाज इंदौर के अध्यक्ष श्री भरत मोदी, गोमटगिरी ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री कमलजी सेठी, दि. जैन महासमिति इंदौर के अध्यक्ष श्री जिनेश झांझरी, अ.भा. प्रज्ञ श्री संघ के अध्यक्ष एवं पुष्पगिरी ट्रस्ट के श्री डी. के. जैन पुलक चेतना मंच के अध्यक्ष श्री प्रदीप बडजात्या, भक्तामर मंडल के अध्यक्ष श्री पूनमचंदजी सतभैया, परवार समाज के श्री अनिलजी जैन को, कुंदकुंद ज्ञानपीठ के मानद् सचिव श्री डॉ. अनुपम जैन, लश्करी मंदिर ट्रस्ट के श्री विरेन्द्र बडजात्या, सम्यक ग्रुप के श्री मनोज पाटोदी, श्री दिगम्बर जैन जैसवाल समाज के श्री सुनिल डोटीया, श्री सुनील जैन 'त्रिमूर्ति', वीर निकलंक के श्री रमेश कासलीवाल, सन्मति स्कूल ट्रस्ट के श्री नेमिचंद लुहाडीया, छावणी दिगम्बर जैन समाज के श्री बाबूलालजी बडजात्या आदि अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

किस्मत कितनी ही बुलंद क्यों न हो, उसे परिश्रम की 'चौखट' से गुजरना पड़ता है।

श्रीमान एवं श्रीमती विमल सोगानी द्वारा नव निर्वाचित अध्यक्षा श्रीमती सरिता जी का सम्मान करते हुए

श्री भरत मोदी नव निर्वाचित अध्यक्षा श्रीमती सरिता जी का सम्मान करते हुए

महामंत्री श्री संतोष पेंढारी का सम्मान करते हुए प्रदीप जैन बड़जात्या

श्री भरत मोदी महामंत्री श्री संतोष पेंढारी का सम्मान करते हुए

यूं ही हम दिल को साफ रखा करते थे, पता नहीं था कि कीमत-चेहरों की होती है

जैन तीर्थक्षेत्र वन्दना: प्रकृति और स्वरुप

प्रो. भागचन्द्र जैन भास्कर
तुकारामचाल, गांधी चौक, सदर, नागपुर- 440001

प्रत्येक धर्म में तीर्थक्षेत्र आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक परम्परा का केन्द्र रहता है। उसे यदि धर्म साधना का स्थल कहा जाये तो अत्युक्ति नहीं होगी। धर्म का जो, उद्देश्य होता है वही उद्देश्य तीर्थ का होता है। इसलिए मूल रुप में धर्म को ही तीर्थ कहा गया है। इन तीर्थों के सम्बन्ध से तीर्थक्षेत्र शब्द का प्रचलन हो गया। कालान्तर में तीर्थक्षेत्र के साथ ही श्रुत, गणधर और आचार्यो के प्रति भक्ति भावना के कारण उनसे सम्बद्ध स्थान भी तीर्थक्षेत्र की परिधि में आ गये। भक्तगण उन तीर्थ क्षेत्रों की वन्दना करता है और पुण्य-संचयकर मुक्ति प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। तीर्थकर, परमात्मा या ईश्वर के स्थान पर तीर्थ-साहित्य आदि की परम्पराएं प्रारम्भ हो जाती हैं।

जैनधर्म और संस्कृति में भी तीर्थक्षेत्रों की अपनी स्वस्थ परम्परा, इतिहास और पुरातत्त्व रहा है। उनकी जितनी खोज की जाये उतनी ही सांस्कृतिक परम्परा सुदृढ होती जाती है। राजगृहि, सम्मेदशिखर, गिरिनार, मांगीतुंगी, केशरियाजी, श्रवणबेलगोला, मुक्तागिरि, रेशन्दीगिरि आदि शताधिक ऐसे ही जैन तीर्थ स्थान हैं जिनकी वन्दनाकर भक्तगण अपना अहोभाग्य मानता है और सामाजिक और मानवीय सम्वेदना का विकास करता है। इसलिए तीर्थक्षेत्र को जैन संस्कृति का प्राण भी कहा जा सकता है। दूसरे शब्दों में जैन तीर्थ वन्दना जैनधर्म वन्दना है और जैनधर्म वन्दना आत्मवन्दना है। आत्मवन्दना ही मुक्ति का यथार्थ मार्ग है।

तीर्थ की अवधारणा

साधारणत: तीर्थ शब्द का अर्थ है जो संसार- समुद्र से पार होने में सहयोगी हो- तीर्यते अनेनेति तीर्थ:। आचार्य जिनसेन ने **संसाराब्धेरपारस्य तरणे तीर्थमिष्यते** (आदि पुराण, 4.8) कहकर यही अर्थ व्यक्त किया है। जिस प्रकार सरिता, समुद्र आदि के किनारे अवस्थित घाट व्यक्ति को पार लगाने का साधन बनता है वैसे ही ये तीर्थक्षेत्र भवसागर से पार होने का साधन बन जाते हैं। वृहत्स्वयंभू स्तोत्र में भी यही आवधारणा दिखाई देती है- **तीर्थमपि स्वं जनन-समुद्रत्रासितसत्त्वोत्तरणपथोग्रम-** 109। इसी अवधारणा पर स्तोत्र लिखे गये और स्वामी समन्तभद्र ने इसी अवधारणा के आधार पर जिनशासन को सर्वोदय-तीर्थ कहा है।

सर्वान्तवत्तद्-गुण–मुख्यकल्पं सर्वान्तशून्यं च मिथोनपेक्ष्यम्।
सर्वापदामन्तकरं निरन्तं सर्वोदयं तीर्थमिदं तवैव।।

- युक्त्यनुशासन, 62

तीर्थ और धर्म की एकात्मता: निश्चयतीर्थ एवं व्यवहारतीर्थ

उपर हमने तीर्थ का सामान्य अर्थ देखा। पर इसका एक लाक्षणिक अर्थ भी है। वह है धर्म। कदाचित् सबसे पहले आचार्य कुन्दकुन्द ने तीर्थ के दो भेद किये- निश्चय तीर्थ औ व्यवहार तीर्थ। इसी को क्रमश: भावतीर्थ और द्रव्यतीर्थ कहा गया। बोध पाहुड में उन्होंने कहा-

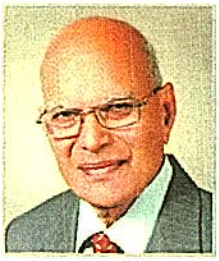

जं णिम्मलं सुधम्मं सम्मन्तं संजमं णाणं।
तं तित्थं जिणमग्गे हवेइ जदि संतिभावेण।।

गाथा 27

अर्थात निर्मल उत्तम क्षमादि धर्म, निर्दोष सम्यक्त्व, निर्मल संयम, द्वादश प्रकार का निर्मल तप तथा वस्तुतत्त्व का यथार्थ ज्ञान, ये सभी तीर्थ हैं। यहां समूचे जिनधर्म को तीर्थ की संज्ञा दी गई है। मूलाचार में इसी को श्रुतधर्म और तीर्थ माना है- **सुदधम्मो एत्थ पुण तित्थं।** धवला में रत्नत्रय का पालन करने वाला चतुर्विध संघ होता है इसलिये बाद में चतुर्विध संघ को भी तीर्थ की संज्ञा दी गई। इसी को भाव तीर्थ कहा गया है। भावतीर्थ ही तीर्थ का यथार्थ रुप है।

आवश्यक निर्युक्ति मलयवृत्ति में इन सभी विचारों का समन्वयकर चातुर्वर्णी श्रमण संघ को तीर्थ का नाम दिया है। संघ निराधार नहीं होता इसलिए उसके प्रवचन को भी तीर्थ कह दिया। इसी के साथ ही गणधर को भी उसमें समाहित कर लिया। अर्थात् श्रुत विहित मार्ग पर चलने वाला संघ भावतीर्थ है। संसार सागर से पार कराने वाले तीर्थकर, गणधर और साधु संघ वास्तविक तीर्थ है। निश्चय या भावतीर्थ है (196, पृ. 592)। नदी, सरोवर, तट आदि जड़ या द्रव्य तीर्थ हैं। वैदिक संस्कृति में द्रव्य तीर्थ को महत्त्व अधिक दिया गया है जब कि जैन परम्परा भावतीर्थ को यथार्थ तीर्थ मानती है। और जिनेन्द्र देव के गर्भ, जन्म, दीक्षा तप और निर्वाण इन पंचकल्याणकों के स्थानों को द्रव्यतीर्थ कहा गया है। विशेषावश्यक भाष्य में नाम और स्थापना जोड़कर तीर्थ के चार भेद कर दिये गये। इनमें विशेष स्थलों को तीर्थ की संज्ञा दी गयी है।

निश्चय तीर्थ की प्राप्ति में कारणभूत ये सभी पंचकल्याणकों से सम्बद्ध स्थल व्यवहारतीर्थ है, जैसे ऊर्जयन्त, शत्रुंजय, गिरनार, पावागिरि आदि। ये सभी तीर्थ कर्मक्षय के कारण होने से वन्दनीय हैं (बोधिपाहुड टीका, 27)।

इस तरह तीर्थ के दो भेद हैं- द्रव्य तीर्थ और भावतीर्थ। भावतीर्थ या निश्चयतीर्थ तीर्थकर, श्रमणसंघ, और प्रवचन को कहार जाता है जो कर्म मुक्ति या आत्मचिन्तन में साक्षात् कारण होते है। तथा व्यवहार तीर्थ या द्रव्यतीर्थ पंचकल्याणक स्थलों को माना जाता है।

तीर्थकर शब्द की अवधारणा

तीर्थ को स्थापित करने वाला तीर्थकर कहलाता है। ये तीर्थकर संसार-सागर से पार कराने वाले सिद्धि-पथ के उपदेशक, श्रुत और गणधर रुप तीर्थ के

आदमी उच्चारण से नहीं, उच्च आचरण से श्रेष्ठ बनता है

निर्माता धर्मसंघ के निर्माता, केवलज्ञानी और रत्नत्रय रुप मोक्षमार्ग के उपदेष्टा होते हैं (न. आ. 302; आ. नि. 80)। दिघनिकाय के सामन्नफलसुत्त में ऐसे तीर्थंकरों की संख्या तथागत बुद्ध को मिलाकर सात हो जाती है। उनका तीर्थ एक साधकों का वर्ग होता था। विशेषावश्यक भाष्य में ऐसे चार-चार प्रकार के साधक वर्गों का उल्लेख मिलता है- 1) कुछ तीर्थ या साधक वर्ग ऐसे होते है जिनमें प्रवेश भी सुखद होता है और साधना भी सुखद होती है। ऐसा वर्ग शैव साधक वर्ग, 2) एक अन्य साधक वर्ग हैं जिसमें प्रवेश सुखद होता है पर साधना कठिन होती है। जैसे बौद्ध साधक वर्ग, 3) तृतीय साधक वर्ग में प्रवेश कठिन होता है पर साधना सुखद है ऐसा साधक वर्ग अचेल अर्थात् दिगम्बर जैन सम्प्रदाय का है, चतुर्थ वर्ग में ऐसा साधक वर्ग है जिसमें प्रवेश और साधना, दोनों दुष्कर हैं। इसमें श्वेताम्बर संघ की गणना की गई है। इस चतुर्थ वर्ग में साधना और साधक का जो रूप मिलता है वह निश्चित ही विवाद का विषय है। पर इतना तो निश्चित है कि तीर्थ का अर्थ साधना और संघ है और संघनाय के अपनी धार्मिक प्रकृति के अनुसार उसका निर्माण करता है। उस धार्मिक प्रकृति में उसके सिद्धान्त और उसकी पूजा पद्धति समाहित होती है।

तीर्थ-वन्दना का इतिहास

तीर्थवन्दना के लिए साधक तीर्थवन्दना किया करता है। यह तीर्थवन्दना कभी अकेले करता है, कभी सपरिवार जाता है और कभी संघ बनाकर जाता है। यदि संघ जाता है तो उसका संघपति होता है। जो यात्रा का सम्पूर्ण व्यय वहन करता था। प्राचीन काल में जब आवागमन के साधन कम होते थे, यह तीर्थवन्दना हाथी, घोडे, रथ और बैल गाड़ियों से की जाती थी, घर से सारा सामान ले जाते थे, महिनों लग जाते थे, सब माया-मोह छोड़कर निकलते थे। जगह-जगह स्वागत होता था और वापिस आने पर अंचल में उसका कद बढ़ जाता था।

इस सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि जैन तीर्थों की स्थापना तीर्थंकरों के पंचकल्याणक स्थानों, नगरों और पर्वतों पर हुई। वैदिक तीर्थों का साधारण तौर पर विकास नदियों के किनारे हुआ क्योंकि उसमें बाह्य शुचिता पर अधिक ध्यान दिया गया। जबकि जैन परम्परा बाह्य शुचिता के स्थान पर आत्मशुद्धि पर अधिक ध्यान रखती है। इसलिए उसके महापुरुषों ने जहां-जहां तपस्याएं कीं, वे स्थल तीर्थ बन गये। ये तपस्या स्थल पर्वत हुआ करते थे। जैन साधक पर्वतों की कन्दराओं मैं बैठकर साधना किया करते थे। वहां एकाकी जीवन और प्रकृति की गोद में बैठकर आत्मचिन्तन निश्चित ही एक नयी ऊर्जा देता होगा। साधना के लिए ऐसा ही एकाकी जीवन अपेक्षित होता है। समाज के बीच या घर में रहकर यह साधन उतनी विशुद्ध नहीं हो पाती। यही कारण है कि जैन तीर्थो का सम्बन्ध पर्वतों से अधिक रहा है। यही पर्वत तीर्थस्थल हो गये। शिखरजी, गिरनारजी ऐसे ही पर्वत हैं जिनका मूल सम्बन्ध अवश्य जोड़ा अन्यथा उनकी आश्रम व्यवस्था अधिक रही है।

हमारी परम्परा और हमारे इतिहास में तीर्थंकरों की कल्याणक भूमियों को पवित्र स्थल माना गया, विशेष रूप से जन्म, तप और निर्वाण स्थलों की पूजावन्दना होने लगी। जैन आगमिक साहित्य के प्राचीनतम अंग आचारंग में इस प्रकार की यात्राओं का कोई उल्लेख नहीं है। हां, मह शब्द का प्रयोग अवश्य मिलता है जो महोत्सव का सूचक है। ये महोत्सव कल्याणक दिवसों पर आयोजित होते होंगे। दिघनिकाय में निगण्ठनातपुत्त (महावीर) के निर्वाण दिवस पर इस प्रकार के महोत्सव होने का उल्लेख है। परन्तु अध्यात्ममार्गी जैन परम्परा इस प्रकार के महोत्सवों में मुनि को संमिलित होने का निषेध करती है:

से भिक्खु वा भिक्खु वा.... थूभ महेसु, वा चेतिय महेसु वा तडाग महेसु वा, दह महेसु वा णई महेसु वा सरमहेसु वा... णो पडिगाहेज्जा- आचारांग, 2/1/12/24 (लाडनूं)

बौद्धधर्म के ऐतिहासिक प्राचीनतम ग्रन्थ महावंस के अनुसार श्रीलंका में बौद्धधर्म पहुंचने के पूर्व लगभग पांचवीं शताब्दी ई. पू. में जैन चैत्य होने का उल्लेख मिलता है पर वहां भी महोत्सव का उल्लेख नहीं मिलता। हां उत्तरकाल में समवायांग में (ल. चतुर्थ- पंचम शताब्दी में) कल्याणक क्षेत्रों की चर्चा अव हुई है (225/1; आवश्यक निर्युक्ति, 382-84) जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति म अस्थियों और चिताभस्म पर चैत्य और स्तूप निर्माण का उल्लेख मिलता है (2.111)। वहीं पर्व तिथियों में नन्दीश्वर द्वीप जाकर देवों द्वारा महोत्सव मनाने का भी उल्लेख हुआ है (जम्बूद्वीप 2.114-22; आ. नि. 45. सम. 35.3)

लगभग पांचवीं शताब्दी के पूर्व तीर्थयात्रा का वर्णन जैन साहित्य में स्पष्ट रुप से दिखाई नहीं देता। श्रीलंका के जैन चैत्य निर्माण परम्परा का समर्थन लोहानीपुर और मथुरा में प्राप्त आयागपट्टों और स्तूपांकनों में जैन पूजा परम्परा के उत्कीर्णन से होता है परन्तु तीर्थवन्दना का उल्लेख मध्यकाल के साहित्य में ही मिलता है। आचार्य समन्तभद्र के साहित्य में भी तीर्थवन्दना का उल्लेख नहीं है, तीर्थ का उल्लेख अवश्य हुआ है (वृ. स्वयंभू 109)। वहां ऊर्जयन्त का भी वर्णन मिलता है।

निर्वाकाण्ड और संस्कृत निर्वाणभक्ति में तीर्थों का वर्णन मिलता है। यदि उन्हें असन्दिग्ध रुप से आचार्य कुन्दकुन्द और पूज्यपाद का मान लिया ज तो हमारी तीर्थ परम्परा काफी प्राचीन सिद्ध होती है अन्यथा ल. दशवीं शताब्दा से तीर्थयात्रा का विवरण अधिक मिलने लगता है। रविषेण ने भी पद्मचरित में तीर्थस्थलों की चर्चा की है। जब तीर्थस्थलों की चर्चा होती है तो स्वभावतः तीर्थयात्रा भी उनके साथ अनुसांगिक रूप से जुडी रहती है।

इसी तरह श्वेताम्बर साहित्य में तीर्थयात्रा के उल्लेख निर्युक्ति, भाष्य, महानिशीथ तथा चूर्णि साहित्य में उपलब्ध होते हैं जो लगभग पंचम-षष्ठ शताब्दी के बाद का है। निशीथचूर्णि (भाग 3, पृ. 24) में स्पष्ट रुप से तीर्थयात्रा का उल्लेख हुआ है। आचारंग निर्युक्ति में अष्टापद, ऊर्जयन्त, गजाग्रपद, धर्मचक्र और अहिछत्र को वन्दन किया गया है. वहां 13 वीं शती से तीर्थयात्रा तथा संघपति का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।

अट्वावय उज्जिंते गयग्गपए धम्मचक्के य।
पासरहावतनगं चमरुप्पायं च वंदामि-आचारांगनिर्युक्ति, पत्र 18

इससे इतना तो स्पष्ट है की इस समय तक तीर्थवन्दना एक पुण्यकार्य

माना जाने लगा था। उसके बाद जहां भी कलात्मक मन्दिरों का निर्माण हुआ उन्हें भी तीर्थक्षेत्र के रूप में स्वीकार लिया गया। इसी तरह जो मूर्तियां अतिशयकारी हुई उन्हें भी तीर्थ के रूप में मान्यता मिल गई।

तीर्थक्षेत्र और क्षेत्र मंगल

कतिपय आचार्यों नें तीर्थ के स्थान पर क्षेत्र मंगल शब्द का प्रयोग किया है। उदाहरणत: षट्खण्डागम (प्रथम खण्ड पृ 28) में ऐसे क्षेत्रों को क्षेत्रमंगल कहा गया है जिनका सम्बन्ध तीर्थकरों के जन्म, तप, निर्वाण आदि से रहा हो। आचार्य यतिवृषभ ने भी तिलोयपण्णती (गाथा 21-24) में कल्याणक क्षेत्रों को क्षेत्रमंगल की संज्ञा दी है। इन दोनों शब्दों में कोई विशेष अन्तर नहीं है। तीर्थ के साथ साधारण तौर पर क्षेत्र शब्द जुडा हुआ रहता है। उसे फिर तीर्थक्षेत्र कहा जाये या क्षेत्रमंगल, कोई फर्क नहीं है। तीर्थक्षेत्र मंगलकारी तो होते ही हैं। उनके साथ वीतरागी महापुरुषों का सम्बन्ध स्थापित हुआ है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि वह क्षेत्र भी कल्याणकारी होगा। उसकी पूजा, भक्ति साधक के लिए पुण्यार्जन का कारण बनेगी।

तीर्थक्षेत्रों के प्रकार

दिगम्बर एवं श्वेताम्बर परम्परा में तीर्थक्षेत्रों को तीन प्रकारों में विभक्त किया गया है- 1) निर्वाण क्षेत्र, 2) कल्याणक क्षेत्र, और 3) अतिशय क्षेत्र। इस मान्यता का आधारभूत ग्रन्थ दिगम्बर परम्परा में है आचार्य कुन्दकुन्द का प्राकृत निर्वाणकाण्ड तथा आचार्य पूज्यपाद द्वारा रचित संस्कृत निर्वाणभक्ति। इसमें 19 निर्वाणक्षेत्रों तथा कल्याणकों और अतिशय क्षेत्रों का वर्णन है। संस्कृत निर्वाण भक्ति में इस प्रकार तीर्थ क्षेत्रों के भेद नहीं किये गये हैं। पर वहां 25 निर्वाणक्षेत्रों का वर्णन है। इस तरह तीर्थक्षेत्रों के तीन प्रकार हैं-

1) निर्वाण क्षेत्र- निर्वाण क्षेत्रों की संख्या पांच है- कैलाश, चम्पा, पावा, गिरनार (ऊर्जयन्त), और सम्मेदशिखर, इनमें तीर्थकर ऋषभदेव, वासुपुज्य, महावीर और नेमिनाथ क्रमश: प्रथम चार क्षेत्रों से निर्वाण को प्राप्त हुए और शेष वीस तीर्थकर सम्मेदशिखर से निर्वाण पहुंचे। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य स्थान हैं जहां से मुनिवरों ने निर्वाण पाया।

2) कल्याणक क्षेत्र- तीर्थकरों के गर्भ, जन्म, दीक्षा, तप इन कल्याण के क्षेत्रों को कल्याणक क्षेत्र कहा गया है।

3) अतिशय क्षेत्र- जहां किसी मूर्ति या मन्दिर में कोई चमत्कार हो तो उस क्षेत्र को अतिशय क्षेत्र कहा जाता है। जैसे महावीरजी, हुम्मचा, राणकपुर, श्रवणबेलगोल आदि।

तीर्थवन्दना विषयक साहित्य

जैसा हम पीछे संकेत कर चुके हैं, तीर्थ वन्दना विषयक साहित्य साधारण तौर पर लगभग पांचवीं शताब्दी से उपलब्ध होता है, भले ही तीर्थ और तीर्थस्थलों का उल्लेख उसके पूर्ववर्ती साहित्य में मिलता हो। यहां हम दिगम्बर-श्वेताम्बर, दोनों परम्पराओं में उपलब्ध साहित्य का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं ताकि लेखक उनका उपयोग कर सके-

दिगम्बर परम्परा का तीर्थवन्दना विषयक साहित्य

ग्रन्थनाम

षडखण्डागम और टीका पुष्पदन्त, भूतबली, प्रथम शती ई. पू

मूलाचार आचार्य कुन्दकुन्द /नहकेर प्रथम शती

प्राकृत निर्वाणकाण्ड कुन्दकुन्द प्रथम शती

तिलोयपण्णत्ती यतिवृषभ ल. पंचम शती

संस्कृत निर्वाणभक्ति पूज्यपाद ल. षष्ठ शती

पद्मचरित रविषेण ल. सातवीं शती

शासनचतुस्त्रिंशिका मदनकीर्ति 12 वीं- 13 वीं शती

निर्वाणकाण्ड मदनकीर्ति 12 वीं- 13 वीं शती

तीर्थवन्दना मदनकीर्ति 12 वीं- 13 वीं शती

जीरावला पार्श्वशाथस्तवन उदयकीर्ति 12 वीं- 13 वीं शती

पार्श्वनाथस्तोत्र पद्मनंदि 14 वीं शती

माणिक्यस्वामीविनति श्रुतसागर 15 वीं शती

मांगीतुगीगीत अभयचन्द 15 वीं शती

तीर्थवन्दना गुणकीर्ति 15 वीं शती

तीर्थवन्दना मेघराज 15 वीं शती

जम्बूद्वीपजयमाला तीर्थजयमाला 15 वीं शती

जम्बूस्वामिचरित सुमतिसागर 16 वीं शती

सर्वतीर्थ वन्दना राजमल्ल 16 वीं शती

श्रीपुरपार्श्वनाथविनती ज्ञानसागर 16वीं -17 वीं शती

पुष्पांजलियमाला सोमसेन 17 वीं शती

तीर्थजयमाला जयसागर 17 वीं शती

तीर्थवन्दना चिमणा पंडित 17 वीं शती

जिनसेन 17 वीं शती

सर्वत्रैलोक्यजिनालय जयमाला विश्वभूषण 17 वीं शती

बलिभद्र अष्टक मेरुचन्द्र 17 वीं शती

बलिभद्र अष्टक गंगादास 17 वीं शती

मुक्तागिरि जयमाला 17 वीं शती

रामजटेल छंद मकरंद 17 वीं शती

पद्मावती स्तोत्र तोपकारि 18 वीं शती

षट्तीर्थ वन्दना देवेन्द्रकीर्ति 18 वीं शती

जिनसागर 18 वीं शती

मुक्तागिरि आरती राघव 18 वीं शती

अकृत्रम चैत्यालयजयमाला पं. दिलसुख 19 वीं शती

पार्श्वनाथ जयमाला ब्रह्म हर्ष 19 वीं शती

तीर्थवन्दना कवीन्द्रसेवक 19 वीं शती

श्वेताम्बर तीर्थवन्दना साहित्य

दिगम्बर परम्परा की तरह श्वेताम्बर परम्परा में भी जैन तीर्थवन्दना उपलब्ध होती है जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

महानिशीथ

व्यवहारभाष्य

व्यवहार चूर्णि

तित्थोगालिय प्रकीर्णक

सकलतीर्थस्तोत्र सिद्धसेनसूरि वि.सं. 1123

Anger burns the nature of man just like fire burns things.

अष्टोत्तरितीर्थमाला महेन्द्रसूरि वि. सं. 1241
विविधतीर्थकल्प जिनप्रभसुरि वि. सं. 1389
तीर्थयात्रास्तवन विनयप्रभ उपाध्याय वि. सं. 14 वीं शती
अष्टोत्तरीतीर्थमाला मुनिप्रभसूरि वि. सं. 15 वीं शती
तीर्थमाला मेघकृत वि. सं. 16 वीं शती
पूर्वदेशीयचैत्यपरिपाटी हंससोम वि. सं. 1565
सम्मेतशिखर तीर्थमाला विजयसागर वि. सं. 1717
श्री पार्श्वनाथ नाममाला मेधविजय उपाध्याय वि. सं. 1721
तीर्थमाला शीलविजय वि.सं. 1748
तीर्थमाला सौभाग्य विजय वि. सं. 1750
शत्रुंजयतीर्थपरिपाटी देवेन्द्र वि. सं. 1769
सुरतचैत्यपरिपाटी घालासाह वि. सं. 1793
तीर्थमाला ज्ञानाविमलसूरि वि. सं. 1795
सम्मेतशिखरतीर्थमाला जयविजय वि. सं. 1795
गिरनार तीर्थ रत्नसिंहसूरिशिष्य वि. सं. 1795
चैत्यपरिपाटी कल्याणसागर वि. सं. 1795
शत्रुंजयचैत्यपरिपाटी जिनसुखसूरि वि. सं. 1795
शत्रुंजयतीर्थयात्रारास विनीत कुशल वि. सं. 1795
आदिनाथ रस कविलासवण्यसमय वि. सं. 1795
पार्श्वनाथसंस्खास्तवन रत्नकूशल वि. सं. 1795
कावीतीर्थवर्णन कवि दिपविजय वि. सं. 1886
तीर्थराज चैत्यपरिपाटीस्तवन साधुचन्द्रसूरि वि. सं. 1886
पूर्वदेशचैत्यपरिपाटी जिनवर्धनसूरि वि. सं. 1886
मंडपांडचलचैत्यपरिपाटी खेमराज वि. सं. 1886

यह सूची प्राचीनतीर्थमालासंग्रह सम्पादक-विजयधर्मसूरिजी के आधार पर दी गई है।

इस तरह जैनतीर्थ वन्दना जैन परम्परा में समान रुप से शताब्दियों से चली आ रही है। वह द्रव्यतीर्थ और भावतीर्थ दोनों का संयोजन करती है, पुण्यार्जन का निमित्त बनती है और सामाजिक समरसता में सहयोग देती है। इस दृष्टि से सभी तीर्थक्षेत्रों का आधुनिक दृष्टि से विकास किया जाना नितान्त आवश्यक है। हां, पदाधिकारी यह ध्यान अवश्य रखें कि इस विकास में तीर्थक्षेत्रों का इतिहास ओर पुरातत्त्व नष्ट न हो अन्यथा हमारी सांस्कृतिक धरो हमारे हाथ से छिन जायेगी।

श्री १००८ भगवान आदिनाथ के जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव मनाया

मुनिश्री सुप्रभसागर

श्री दिगंबर जैन परवार मंदीर ट्रस्ट एवं मित्रम् परिवार व्दारा २४ तीर्थंकर में से प्रथम तीर्थंकर आदिब्रम्हा श्री १००८ भगवान आदिनाथ के जन्म एवं तप कल्याणक उनके जन्म एवं तप स्थान अयोध्या मे एवं पूरे भारतवर्श में मनाया जाते है। उसी प्रकार नागपुर के परवार मंदीर ट्रस्ट एवं मित्रम् परिवार व्दारा आचार्य विशुध्दसागरजी के परम शिष्य मुनिश्री सुप्रभसागरजी, मुनिश्री अनुपमसागरजी, मुनिश्री प्रणतसागरजी के सान्निध्य में भव्य श्रीजी की शोभायात्रा अहिंसा भवन, शहीद चौक, नेहरु पुतला होते हुये हजारों भक्तों के साथ बडे उल्लास से बाजे गाजे श्रमणोपासक श्री संघ, तुलसीनगर से अनुपम जैन, अंकित जैन, रिया जैन, आकांक्षा जैन, रश्मी जैन, नमन जैन, रोहीत जैन, अंकित जैन इन्होंने ढोलतासा बजाते हुय भक्तों का मन जीता। पालकी में से भगवान आदिनाथ को मंदिर में विराजमान कर उनका अभिषेक, मुनिश्री सुप्रभसागरजी के मुखारविंद से शांतिधारा मित्रम् परिवार नागपुर व्दारा की गयी।

प.पू.मुनिश्री सुप्रभसागरजी ने अपने आशीर्वचन में कहा तीर्थंकर भगवान का जब जन्म होता है तब तीनों लोक में कुछ समय के लिये सभी प्राणीमात्र को नारकीयों को भी सुख और षांती का आभास होता है। स्वर्ग में तो सौधर्मइंद्र का आसन कम्पायमान होता है तो वह ७–८ कदम आगे चलकर भगवान को साष्टांग नमस्कार कर कुबेर को भगवान के पांडुकशिला के उपर अभिषेक करने के लिये व्यवस्था बनाने के लिये कहते है।

हर्षोल्हास के साथ सभी भक्तों को लड्डु मिठाईयां का वितरण मित्रम् परिवार व्दारा किया गया। इस कार्यक्रम में प्रमुख रुपसे भारतीय जन... पार्टी अल्पसंख्यक मोर्चा महाराष्ट्र के सचिव सुमतजी लल्ला जैन, प्रचार प्रसार प्रमुख हिराचंद मिश्रीकोटकर, अध्यक्ष जिनेंद्र लल्ला, उपाध्यक्ष राजेंद्र पहलवान, मंत्री सत्येंद्र मामु, पवन बडकुर, राजु जैन, दिलीप जैन, इस कार्यक्रम में मित्रम् परिवार का सबसे बडा योगदान रहा। प्रमुखतासे अविनाश भिकमचंद, आशिष चौधरी, आशिष पंचमलाल, विशाल ठेकेदार, नरेश बडकुर, प्रेम तुफान, सुभाष चीनी, आशिष पहलवान, दिनेश जैन, मनीष बडकूर, अन्नु जैन, मिनु जैन, अभिलाशा जैन, निरज लल्ला, बंटी जैन, भरत नानकचंद, निकेश जैन, संतु मामु, गोलु लड्डु, रविंद्र मोदी, विनय जैन, अनु जैन, पप्पु पुजारी, विशेष संस्था का सहयोग : दिगंबर जैन वीर सेवा मंडल, बाहुबली वेदी ग्रुप, परवारपुरा महिला मंडल, ज्ञानोदय सेवा संघ, महावीर पाठशाला, मीनु मिल्टन अर्चना जैन कविता जैन, सुधा जैन आदि शोभा यात्रा सैकड़ों की तादाद में शामिल होकर धर्म लाभ लिया। अविनाश जैन, विशाल कमल जैन इन्होंने सभी भक्तों का आभार माना।

यूं ही हम दिल को साफ रखा करते थे, पता नहीं था कि कीमत-चेहरों की होती है

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, राजस्थान अंचल

प्रतिवेदन

भारतवर्ष की एक मात्र संस्था भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, तीर्थो के विकास एवं संवर्धन में अनवरत् रूप से लगी हुई है जिसमें प्रदेशीय अंचल शाखाएं अपनी भूमिकाओं का केन्द्रीय समिति के मार्गदर्शन में अपने दायित्वों का निर्वहन कर रही है। उक्त संदर्भ में राजस्थान अंचल के दिनांक 23 मार्च 2014 से गठन के पश्चात् किये गये कार्यो का ब्यौरा में आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूं:-

1. भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल का गठन

दिनांक 23 मार्च 2014 को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल की आयोजित सर्वसाधारण सभा में श्री राजेन्द्र के. गोधा जी को राजस्थान अंचल के निर्विरोध रूप से अध्यक्ष पद पर आसीन किया गया, तत्पश्चात् उन्होंने अपनी कार्यसमिति का गठन किया जिसमें मुझे महामंत्री पद का गुरूत्तर भार सौंपा गया। आज गोधा जी के नेतृत्व में तीर्थक्षेत्र कमेटी उत्तरोत्तर प्रगति के सोपानों पर आरूढ़ है, एवं पूर्ण समर्पण भाव से अपने दायित्वों का निर्वहन कर रही है।

2. क्षेत्रीय प्रतिनिधि सम्मेलन दि. 27/07/14 स्थान: गोम्मटगिर (इन्दौर)

गोम्मटगिरी में आयोजित दिनांक 27/07/14 को क्षेत्रिय प्रतिनिधि सम्मेलन में हम, वहां सम्मिलित हुए और मजबूती से राजस्थान अंचल का पक्ष रखा गया। हमने वहां अतिशय व तीर्थ क्षेत्रों पर सी.सी.टी.वी. कैमरे लगाने की विस्तृत कार्यसूची प्रस्तुत की। राजस्थान में स्थित तीर्थक्षेत्र केशरियाजी, ऋषभदेवजी के सम्बन्ध में भी हमने अपना पक्ष रखा जिसमें यही सुझाया गया कि अगर मामला आपसी वार्ता से हो सकें तो ज्यादा अच्छा है, अन्यथा दूसरा विकल्प कानूनी ही बचता है। हमने यह भी कहां कि यह एक ऐसा कार्य है जो केन्द्र के सहयोग से ही किया जा सकता है। मुश्किलें आयेगी किन्तु हम उनमें पूरा सहयोग करेगें। ''रोशनी क्यों न आयेगी हमारे आंगन में हम अंधेरों को निगल जायेगें।'' इसी विश्वास के साथ हमने यह भी कहां कि हम परम्परागत आम्नाय से हो रही पूजा पद्धति में कोई हस्तक्षेप नहीं करेगें। हमारा प्रमुख लक्ष्य केवल क्षेत्रों का विकास ही रहेगा। राजस्थान अंचल द्वारा किये गये कार्यो की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीरजी जैन एवं महामंत्री पंकजजी जैन ने भूरि-2 प्रशंसा की।

3. श्री गिरनार राष्ट्रीय स्तरीय एक्शन कमेटी की मीटिंग का आयोजन

दिनांक 16 नवम्बर 2014 को श्री गिरनार तीर्थ राष्ट्र स्तरीय एक्शन कमेटी की मीटिंग तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल द्वारा इसी बड़जात्या हॉल में आयोजित की गई जिसमें तीर्थक्षेत्र कमेटी को राष्ट्रीय व स्थानीय पदाधिकारियों ने भाग लिया। एक्शन कमेटी के राष्ट्रीय सह संयोजक भी निर्मलकुमार जी बण्डी ने गिरनार से संदर्भित सभी पक्षों पर विचार विमर्श किया। गहन मंथन के बीच आवश्यक निर्णय लिए गये एवं कानूनी पक्ष को भी उजागर किया गया। कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीरजी जैन एवं अन्य पदाधिकारी भी उसमें उपस्थित थे। राजस्थान अंचल कमेटी का सौभाग्य रहा कि उसे इसके आतिथ्य का अवसर प्राप्त हुआ। इसके बाद एक अन्य सभा का आयोजन भी किया गया जिसमें ऋषभदेव से आये एक प्रतिनिधि मण्डल के साथ ऋषभदेव जी के संदर्भ में भी विचार विमर्श हुआ व कानूनी पक्षों पर खुलकर विचार किया गया।

4. श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र केशवरायपाटन की यात्रा

दिनांक 6/6/2015 को अतिशय क्षेत्र केशवरायपाटन जाकर मैंने वहां के विकास कार्यो की जानकारी ली एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी से आप क्या सहयोग चाहते है उस पर चर्चा की गई। वहां के प्रतिनिधियों ने आपसी विचार विमर्श के पश्चात् एक लिखित प्रपत्र मुझे प्रदान किया जिसमें तीर्थक्षेत्र कमेटी से अपेक्षाएं जाहिर की गई जिनमें क्रमश: 2 कि.मी. पिछवाड़े से सीधी सड़क निर्माण जो सीधी हाईवे से जुड़ती है, आवासीय भवन हेतु आर्थिक अनुदान एवं हमारे क्षेत्र का चहुमुंखी प्रचार प्रसार होना चाहिए। तीर्थवन्दना में भी विशेष रूप से प्रकाशित हो। उनके द्वारा लिखित प्रपत्र लेकर मैंने उन्हें आगे केन्द्रीय कार्यालय में भिजवा दिया था।

5. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र आदिनाथ स्वामी चांदखेड़ी की यात्रा

दिनांक 6/6/2015 को मैं भगवान आदिनाथ के दर्शन एवं वहां तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा दिये जाने वाले सहयोग के संदर्भ में वहां के प्रबन्धक श्री अविनाशजी जैन से मिला एवं क्षेत्र के विकास एवं अपेक्षाओं पर खुलकर विचार विमर्श हुआ। यह राजस्थान का प्रमुख तीर्थ स्थल है,

लाखों नर नारी यहां आते है एवं यहां वैसे भी स्थानीय प्रबन्ध समिति द्वारा चहुमुंखी विकास करवाया जा रहा है। फिर भी कुछ समस्याओं की ओर उन्होंने लिखित प्रपत्र मुझे दिया, जिसमें प्राय: सी.सी.टी.वी. कैमरे लगाने, पुलिस चौकी की व्यवस्था, 205 कि.वा. का ट्रान्सफार्मर, ठण्डे पानी की मशीनें एवं ए.सी. आदि के लिए आर्थिक सहयोग की अपेक्षाएं सामने रखी। उक्त सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आगे की कार्यवाही हेतु अभी इस ओर प्रयास जारी है।

6. अतिशय क्षेत्र सरवाड़ (अजमेर) में दिनांक 14/6/2015 को मीटिंग का आयोजन

केन्द्रीय कार्यालय के निर्देशन एवं राजस्थान अंचल कार्यालय पर श्री सुजानमलजी जैन एडवोकेट के जो वहां के अध्यक्ष भी है आये प्रपत्रों को ध्यान में रखते हुए राजस्थान अंचल के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र के. गोधा जी के निर्देशन पर मैं अपने साथियों के साथ दिनांक 14/6/2015 को सरवाड़ गया एवं स्थानीय समाज के महानुभावों के साथ एक सभा का आयोजन किया, जिसमें बारी-बारी से सभी के विचारों को सुना गया।

श्री सुजानमल जी ने अपने विचार रखते हुए यही कहां कि मैं अब अध्यक्ष पद पर नहीं रह सकता क्योंकि मेरा स्वास्थ्य अब ठीक नहीं रहता है। वहां पर कुछ मन्दिरजी की दुकानों व जमीनों का आपसी विवाद है जिसके कई मुकदमें न्यायालय में लम्बित भी है। लम्बी वार्ता के पश्चात् हमने यही कहां कि तीर्थक्षेत्र कमेटी का कार्य क्षेत्र का केवल विकास है एवं अभी हम हाल ही बिना अध्यक्षजी की स्वीकृति के चुनाव नहीं करवा सकते है। जयपुर हम सारी रिपोर्ट अध्यक्षजी को दे देगें। विगत काफी वर्षो से श्री सुजानमलजी अपनी अमूल्य सेवाएं वहां दे रहे है जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। विवादित प्रश्नों के रहते हम वहां शीघ्र ही कोई निर्णय नहीं कर सकते है क्योंकि वहां का स्थानीय समाज भी इसमें एकमत नहीं है।

7. तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीरजी जैन का जयपुर आगमन पर भावभीना स्वागत

तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीरजी जैन दिनांक 27 व 28 अप्रेल 2015 को दो दिवसीय यात्रा पर जयपुर पधारें। दिनांक 27/04/15 को अध्यक्षजी समाचार जगत कार्यालय पर पहुंचे, जहां राजस्थान अंचल के प्रमुख पदाधिकारियों के साथ उनकी कई विषयों पर आपसी विचार विमर्श हुआ जिसमें प्रमुख रूप से ऋषभदेव, केशरियाजी के संदर्भ में विचार हुआ और लम्बित कानूनी मामलों को त्वरित गति से निबटाया जाय, इस पर विशेष चर्चा रही। सरवाड़ क्षेत्र (अजमेर) जाकर वहां की समस्या निबटाने का निर्णय भी लिया गया। अंत में धन्यवाद ज्ञापित करते हुए राजस्थान अंचल द्वारा पूर्ण सहयोग का विश्वास दिलाया गया।

दिनांक 28/4/2015 को राष्ट्रीय अध्यक्षजी का किशनगढ़ मदनगंज में विराजित आचार्य वर्धमानसागरजी महाराज ससंघ के दर्शन एवं आशीर्वाद लेने का कार्यक्र सुनिश्चित किया गया। राजस्थान अंचल के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र के. गोधा एवं मैं स्वयं आपके साथ थे। आचार्य श्री के चरणों में बैठकर हम सभी ने आपसी वार्ताएं की एवं आचार्य श्री से आशीर्वाद ग्रहण किया। राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने अपने भ्रमण व कार्यो का ब्यौरा आचार्य श्री के सम्मुख रखा। सम्मेदशिखरजी गिरनारजी क्षेत्रों की चर्चाएं भी हुई व कानूनी प्रक्रियाओं की जानकारी भी प्रस्तुत क.. आचार्यश्री ने अपने मंगल आशिर्वचन में राष्ट्रीय अध्यक्षजी को एवं राजस्थान अंचल को कार्य करते रहने का भरपूर आशीर्वाद दिया।

8. जयपुर में धर्म बचाओ आन्दोलन

संलेखना व संथारा के विरूद्ध न्यायिक फैसले के विरोध में पूरे भारतवर्ष में धर्म बचाओं आंदोलन की गूंज रही। जयपुर में परमपूज्य मुनि श्री प्रमाणसागरजी महाराज के सानिध्य में पूरे राष्ट्र को इस सम्बन्ध में एक होने का आह्वान किया गया। राजस्थान अंचल के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र के. गोधा जी ने मीटिंग में सुझाव रखा कि यह आंदोलन पूरे देश में एक ही दिन हो और उसके लिए 24 अगस्त का दिन तय हुआ और तीर्थक्षेत्र कमेटी का इसमें भरपूर योगदान रहा। पूरे भारतवर्ष में कई प्रान्तों में 24 अगस्त 2015 को अभूतपूर्व आयोजन हुआ जिसमें समग्र जैन समाज ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। जयपुर में श्री राजेन्द्र के. गोधा के नेतृत्व म अभूतपूर्व जुलूस निकाला गया जिसमें सारा जयपुर समाज उमड़ पड़ा। बाद में धर्म सभा को मुनिराजों व अन्य महानुभावों ने सम्बोधित किया। ज्ञातव्य रहे मुनि श्री प्रमाणसागरजी महाराज के चातुर्मास काल में उनके पावन सानिध्य में यह अभूतपूर्व कार्य हुआ, चातुर्मास के मुख्य समन्वयक श्री राजेन्द्र के गोधा थे व महामंत्री के पद पर मुझे कार्य करने का अवसर दिया गया था। श्री सम्मेदशिखरजी में तीर्थ क्षेत्र कमेटी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सभा में इस सफलतम उपलब्धी के लिए श्री राजेन्द्र के गोधाजी को सम्मानित भी किया गया।

– कमल बाबू जैन

दो बातें इंसान को अपनों से दूर कर देती हैं, एक उसका 'अहम्' और दूसरा उसका 'वहम्'

आतंकवाद से पीड़ित विश्व और भगवान महावीर

आज से लगभग २६१४ वर्ष पूर्व भारत वर्ष के पूर्वी अंचल मगधप्रदेश में वैशाली के उपनगर कुंडग्राम में बालक वर्धमान का जन्म हुआ था इनके पिता कुंडग्राम के राजा सिद्धार्थ एवं माता त्रिशला देवी थी। बालक वर्धमान जन्म से ही तीक्ष्ण बुद्धि प्रतिभाशाली एवं विवेकी बालक थे। जीवन जगत एवं मृत्यु के बारे में यथार्थ समझ तथा जन्म से ही आत्मज्ञानी होने से उनकी आसक्ति आत्मिक एवम शाश्वत सुख की ओर ही रही। यही कारण है कि राजकुमार वर्धमान राजसी ठाट बाट में रहते हुए भी 'जले जमवालवत 'भोगोपभोग की सामग्री से निर्लिप्त रहे और ३० वर्ष की अल्प आयु में ही दिगंबर दीक्षा धारण कर एकाकी जीवन अपनाया।

आत्मध्यान में लीन मुनि वर्धमान ने अपनी चित्तवृत्तियों को संकुचित करते हुए पंच इंद्रीय के विषय एवं मोह राग द्वेष आदि मनोविकारों पर विजय पा लगातार १२ वर्ष की प्रगाढ़ तपस्या की उसके पश्चात ४२ वर्ष की अवस्था में पूर्ण ज्ञान अर्थात केवलज्ञान प्राप्त किया। तत्पश्चात संपूर्ण आर्यावर्त में समवशरण अर्थात धर्मसभा सहित विहार करते हुए ३० वर्ष तक आत्मा – परमात्मा, जीवन –जगत, दुख-सुख, धर्म-अधर्म , संसार मोक्ष, तत्व- द्रव्य ,सत-असत आदि विषयों पर धर्मोपदेश दिया। ७२ वर्ष की आयु में पावापुरी (बिहार) से निर्वाण प्राप्त किया।

अनादि - निधन जैन दर्शन की परंपरा में परमार्थ तत्वों के चिंतन की धारा को हुंडावसर्पिणी काल के अंतिम तीर्थंकर तीर्थ नायक भगवान महावीर ने तीव्र गति से संचालित किया। उन्होंने बताया कि जैन धर्म किसी व्यक्ति, जाति, संप्रदाय या पंथ का नहीं अपितु जो इसके सिद्धांतों पर श्रधान करे, उस पर चले, उस के नियमों को पाले, वही सच्चा जैन है। इसका सर्वोत्तम प्रमाण इससे ही मिलता है कि जैन दर्शन एवं धर्म को आगे बढ़ाने वाले २४ तीर्थंकरों में सभी क्षत्रिय कुल के थे। भगवान महावीर ने नर से नारायण, पशु से परमेश्वर, बनने की कला का प्रतिपादन किया है। महावीर ने व्यक्ति एवं वस्तु स्वातंत्र्य की व्याख्या करते हुए जीव मात्र को तथा अणु परमाणु की स्वतंत्र सत्ता घोषित की। जिसे आज वैज्ञानिकों ने प्रयोग द्वारा सिद्ध कर दिखाया।

भगवान महावीर को पांच नामों से जाना जाता है। वर्द्धमान, वीर, अतिवीर, सन्मति और महावीर इन। नामों के पीछे पौराणिक कथाओं के अनुसार कुछ घटनाएं भी जुड़ी हुई है ,जैसे जन्म से ही बुद्धि में तीक्ष्णता एवं शारीरिक व मानसिक विकास में निरंतर असाधारण बढ़ोतरी के कारण इनका नाम वर्धमान पड़ा।आतंक एवं भय फैलाते मदोन्मत्त गजराज को अपनीबुद्धि, विवेक एवं बल से वश में करने के कारण लोग वीर एवं अतिवीर कहने लगे। एक बार संगम नामक देव ने इनके धैर्य एवं साहस की परीक्षा करने के लिए कालिया नाग का रूप धारण कर वर्धमान की बाल क्रीडा में विघ्न उत्पन्न किया ,अन्य साथी राजकुमार तो उस नाग की विकरालता को देख कर दूर भाग गए किंतु वर्द्धमान की निर्भीकता को देख संगम देव स्वयं प्रकट हो गया और उसने उन्हें महावीर नाम से संबोधित किया। सन्मति नाम के संबंध में यह कहा जाता है कि संजय एवं विजय नाम के दो मुनिराजों की तत्वविषयक शंका का समाधान वर्धमान को देखते ही अपने आप हो गया और उन्होंने उस बालक को सन्मति नाम दिया।

यथार्थ में पौराणिक कथाओं द्वारा दिए गए नाम महावीर के गुणों, उनकी विशेषताओं को पूरी तरह से सिद्ध नहीं करते उनके नामों की सार्थकता में उनके अपने विशाल गुण थे। उनकी अंतरंग परिणति जन्म से निर्वाण तक बहुआयामी रही। वे ज्ञान ध्यान में निरंतर वृद्धिंगत रहे इसलिए उन्हें वर्धमान, पंचेंद्रिय उनके विषय तथा मिथ्यात्व पर विजय पाने से ही वीर एवं अतिवीर कहलाए। श्रद्धा, ज्ञान एवं आचरण में साम्यकपना होने से सन्मति तथा अष्ट कर्म रूपी शत्रुओं पर विजय पाने से महावीर के नाम से विख्यात हुए।

भगवान महावीर श्रमण संस्कृति के प्रचारक एवं उसे आगे बढ़ाने वाले थे 'श्रमण'का अर्थ पाली प्राकृत में समान है। भगवान महावीर के प्रमुख सिद्धांतों में सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह प्रमुख हैं। उन्होंने अहिंसा की सूक्ष्मतम व्याख्या करते हुए उस में ही विश्व शांति के सूत्र समाहित किए। उनकी अहिंसा दूसरों को मारने, सताने या दिल दुखाने के निषेध तक ही सीमित नहीं है वरन उसमें आत्मिक शांति एवं निर्मल परिणामों का आधार भी समाहित है। इसलिए अहिंसा की परिभाषा में जिनागम का सार समाया हुआ है।

अप्रादुर्भाव : खलु रागादीनां भवति अहिंसेति ।
तेषां एवोत्पत्ति हिंसेति जिनागमस्य संक्षेपा : ।।

अर्थात मो, राग द्वेष आदि विकारी परिणामों का अपनी आत्मा में उत्पन्न होना ही हिंसा है और उनका उत्पन्न ना होना ही अहिंसा है। यही जिनागम का सार है।

विश्व की विषमता को पहचानकर भगवान महावीर ने मूल पर ही प्रहार किया उन्होंने शांति का अचूक मार्ग अर्थात 'अहिंसा परमो धर्मः' बताया 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' 'यतो धर्म स्ततो जयः' 'जियो और जीने दो' 'चारित्रम खलु धम्मो 'जैसे धर्म के मार्मिक वचन दुनिया को दिए। प्रत्येक प्राणी में समता भाव, बाहर की मृगतृष्णा से दूर रहने का उपदेश, आत्मा की शांति, सीमित संसाधनों में संतोष, संयमित जीवन, सदाचारी आचरण और अहिंसामय जीवन जीने की कला सिखाई।

आज की इस भयावह एवं त्रासदीपूर्ण दुनिया में जबकि आतंकवाद का बोलबाला विश्व के कोने-कोने में दिखाई दे रहा है,

आदमी उच्चारण से नहीं, उच्च आचरण से श्रेष्ठ बनता है

ऐसी स्थिति में आज भगवान महावीर अपने समय से कहीं अधिक प्रासंगिक है। आज हिंसा, क्रूरता, अत्याचार आदि ने कई मुखौटे पहन रखे हैं। व्यक्ति से लेकर समाज, राष्ट्र एवं विश्व तक हीन एवं संकुचित भावना से बुरी तरह आतंकित हैं।

भगवान महावीर ने समता, समानता, एकता ,भाईचारे की जो मिसाल स्यादवाद, अनेकांत, अहिंसा सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह आदि सिद्धांतों के द्वारा दी है वह अन्यत्र दुर्लभ है।

आज दुनिया अपने अहम अर्थात ' मैं ही' सत्य हूँ ---- के चक्कर में आपस में एक दूसरे के सामने बंदूक ताने खड़ी है यदि भगवान महावीर की अनेकांतवाद की दृष्टि और स्याद्वाद के कथन को ध्यान मे रखा जाय की दूसरा पक्ष भी किसी अपेक्षा से सही हो सकता है तो विश्व से आतंकवाद समाप्त होते देर नहीं लगेगी। वाणी में स्यादवाद ही विश्व शांति का अचूक मंत्र है। यदि हम ने भगवान महावीर की समतावादी नीति को और अनेकांतवादी धारणा को अपना लिया तो विश्व में शांति ही शांति रहेगी।

डा महेन्द्र जैन 'मुकुर '
२०६ सी ब्लाक ,सी जी एस कालोनी
वडाला (पश्चिम) मुंबई-४०००३१
Phone-९८६९३५४५१२
Email- drmkjain01@gmail.com

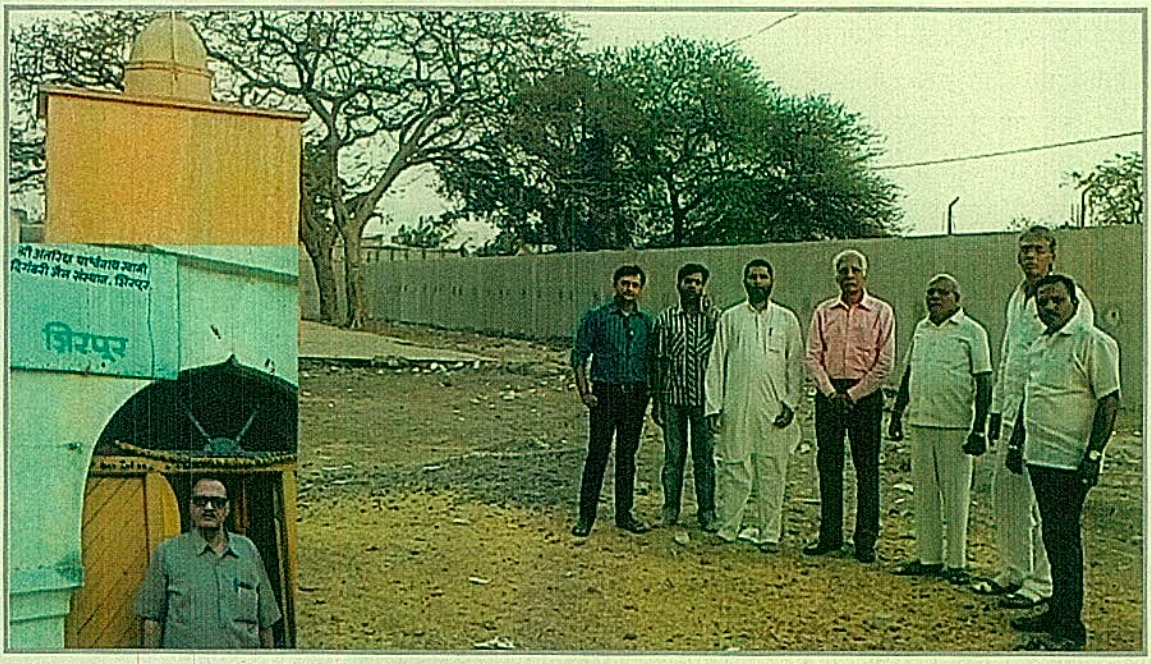

श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ दिगंबर जैन संस्थान शिरपूर के पवळी मंदिर के वॉल कम्पाउण्ड बनाने हेतु तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से रुपये दस लाख का अनुदान दिया गया। उस दिवार का निरिक्षण करते हुए मुंबई उच्च न्यायालय के भूतपूर्व न्यायमूर्ती श्री कैलाशचंद चांदीवाल, तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के महामंत्री श्री देवेंद्रकुमार काला, कोषाध्यक्ष श्री मनोज साहूजी, सदस्य श्री केतन ठोले, क्षेत्रमंत्री श्री चंद्रकांत उखळकर आदि बज ब्रदर्स दिखाई दे रहे है।

श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र गजपंथा म्हसरुळ को तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल की ओर से दिनांक एक अप्रैल 2016 को क्षेत्र अवलोकन करते हुए अंचल अध्यक्ष श्री प्रमोद कासलीवाल, महामंत्री श्री देवेद्रकुमार काला मंत्री, श्री विपिन कासलीवाल, उपाध्यक्ष श्री पवन पाटणी, कोषाध्यक्ष श्री मनोज साहूजी, का. सदस्य श्री केतल ठोले, श्री विजय लोहारे, क्षेत्र के विश्वास श्री राजाभाऊ पाटणी, कार्यकारिणी अध्यक्ष, श्री विजय कासलीवाल, प्रबंधक श्री प्रदीप लोहाडे, छायाचित्र मे दिखाई दे रहे है।

न्यायनिष्ठ की सम्पत्ति कभी कम नहीं होती। वह दूर तक पीढ़ी दर पीढ़ी चली जाती है (तिरुवल्लूर)

एलाचार्य प्रज्ञसागरजी की राष्ट्रपति भवन में आहारचर्या

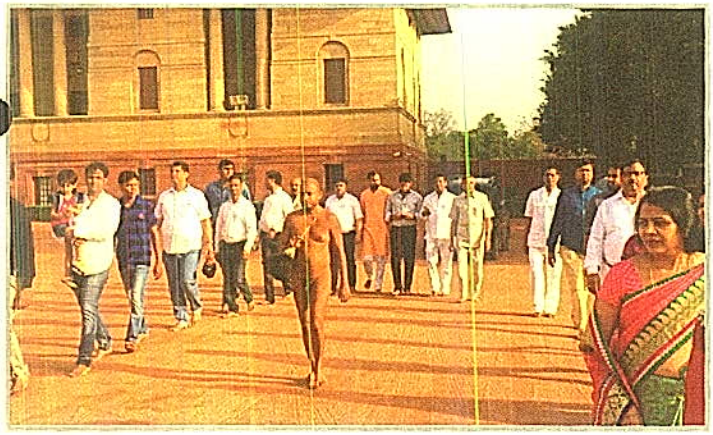

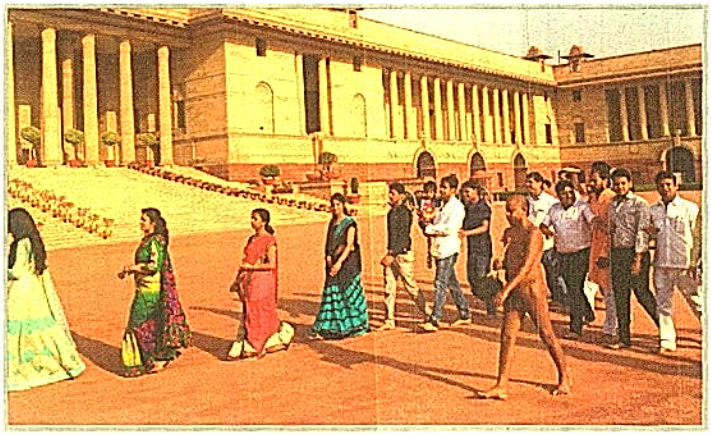

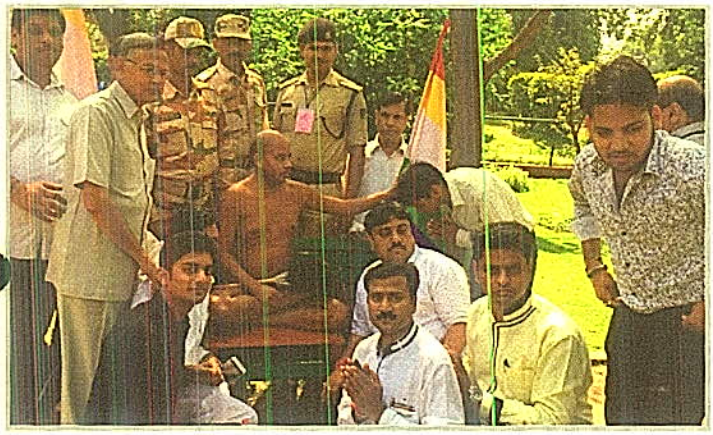

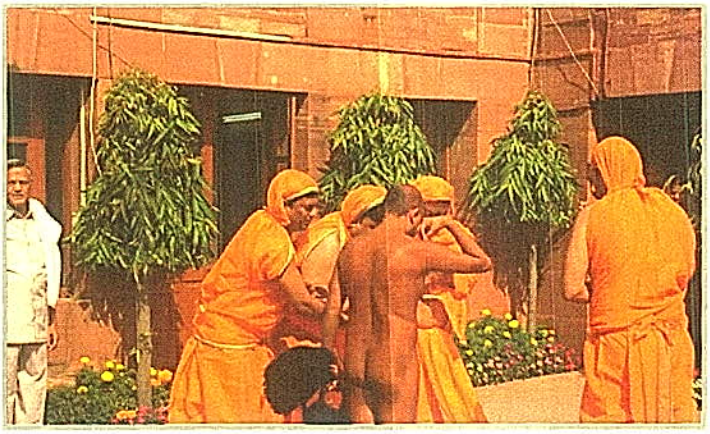

आत्मज्ञान रूप पवित्र तीर्थ है (पद्मनन्दि-पंचविंशतिका, चंद्रोदय अ 28)

आचार्य विमलसागर ऐसे रत्नाकर है, जिनमें अनेक नदियाँ समाहित है

- उपाध्याय ऊर्जयंतसागरजी

आगम के तत्वज्ञान को आत्मसात करने की कला में माहिर थे आ. विमलसागर

- प्रो. नलिन के. शास्त्री

श्योपुर (म.प्र.)। वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत उनके अंतिम दीक्षित शिष्य उपाध्याय श्री ऊर्जयंत सागरजी महाराज के सान्निध्य व मार्गदर्शन में सप्तम चरण में आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज की ६३ वीं दीक्षा जयंती का आयोजन २०-२१ मार्च २०१६ को सकल जैन समाज श्योपुर द्वारा किया गया। २० मार्च को दोपहर १.१५ बजे माणक ग्रीन्स श्योपुर के सुसज्जित भव्य पाण्डाल में 'श्रमण संस्कृति का उन्नयन - आचार्य श्री विमलसागरजी के बहुआयामी अवदान' विषय पर मगध विश्वविद्यालय के प्रो. नलिन के. शास्त्री बोधगया की अध्यक्षता में प्रो. वीरसागर शास्त्री नई दिल्ली, डॉ. एन.के. खींचा जयपुर, डॉ. कमलेश शर्मा जयपुर, एड. अनूपचंद जैन फिरोजाबाद, प्राचार्य पं. सुरेन्द्र जैन भंगवा, पं. सुरेश जैन मारौरा, विकास गंगवाल ग्वालियर, राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद, डॉ. माणकचंद मुण्डफोड़ा उदयपुर, पं. छोटेलाल जैन झांसी, श्री कमल बाकलीवाल ग्वालियर आदि ने अपने उल्लेखनीय शोधपूर्ण आलेखों के माध्यम से आचार्य श्री के बहुआयामी व्यक्तिव पर प्रकाश डाला। संचालन प्रतिष्ठाचार्य पण्डित श्री सुरेन्द्र जैन सलुम्बर राजस्थान ने किया। समारोह में विधायक द्वय श्री दुर्गालाल विजय श्योपुर, पूर्व मंत्री श्री रामनिवास रावत विजयपुर, नगरपालिका अध्यक्ष श्री दौलतराम गुप्ता श्योपुर व श्योपुर समाज के अध्यक्ष श्री चैथमल गोधा खण्डेलवाल समाज, श्री महेन्द्र जैन श्वेताम्बर समाज, श्री वी.के. जैन जैसवाल समाज सहित देशभर से आये आचार्य विमलसागरजी महाराज के गुरू चरणानुरागी उपस्थित थे।

मत ठुकराओं, गले लगाओं की नीति पर चले जैन समाज

उपाध्याय श्री ऊर्जयंत सागरजी महाराज ने आचार्य श्री की ६३ वीं दीक्षा जयंती पर समाज के सामने अपना बेबाक चिंतन प्रस्तुत करते हुए कहा कि हम ही श्रेष्ठ हैं ऐसा वातावरण समाज में निर्मित हो रहा है, जिससे हम पहले पंथों के बंटे अब साधुओं के नाम पर बंट रहे हैं, एक परम्परा के अनुयायी दूसरी परम्परा के साधुओं को आहार नहीं देना चाहते, यह कैसा असहिष्णु समाज निर्मित कर रहे हैं हम, आचार्य विमलसागरजी ने हमेशा समाज में सामंजस्य, सद्भावना बनाने का कार्य किया व कहा कि सच्चा वात्सल्य तो वह है जो दूसरों की पीड़ा देखकर कराह उठे। आचार्यश्री ने हमेशा आशीर्वाद दिया णमोकार का जाप करो, देव-शास्त्र-गुरू का श्रद्धान रखों। उन्हौंनें जहाँ जिनवाणी नहीं थी वहाँ जिनेन्द्र भगवान स्थापित कराये। ऐसे आचार्यश्री के दीक्षा जयंती के अवसर पर हमें समाज को ६३ करने का संकल्प लेना चाहिये, 'मत ठुकराओ, गले लगाओ' की नीति पर चलना चाहिं हमारे महाराज, तुम्हारे महाराज हम उनके भगत, तुम उनके भगत ऐसा मानना ही मिथ्यात्व है। आचार्य विमलसागरजी ऐसा समुद्र है जहाँ अनेक नदियाँ आकर मिल जाती है। जिनायतन हमारी परिणामों की निर्मलता के लिए है, पिच्छी-कमण्डल व गुणों के अनुरागी बनें, गो-वत्स की तरह प्रेम करना चाहिये। जैन, जैन है, दिगम्बर-श्वेताम्बर, तेरा-बीस, मुमुक्षु-तारणपंथी में न बॅटकर वालवाद छोड़ें और भगवान महावीर की देशना को अपनाओ, चौबीस घण्टे में २४ मिनिट अपने लिए निकाले डायरी लिखें। आचार्य विमलसागरजी ने जो अमृत दिया है वह सदियों तक समाप्त होने वाला नहीं है।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. नलिन के. शास्त्री ने अपने ओजस्वी शब्द शिल्प से आचार्यश्री के प्रति विनयांजलि समर्पित करते हुए कहा कि हमें आचार्य श्री विमलसागरजी के चरण अनुरागी होने का गौरव मिला है यह उल्लेखनीय है वे कृपा मूर्ति, मंगलमूर्ति, सम्यक्त्व की राह

के अहर्निष राही थे। सत्य के सदन में अहिंसा के स्नेह की अभिव्यक्ति थे। जन-जन के प्राण थे। विषमता के दौर में आगम के तत्वज्ञान को आत्मसात करने की कला में माहिर थे। उनके जीवन में काव्य सी सरसता थी, ध्यान में आत्मसाधना का संगीत था। वे करूणा और अनुकम्पा की प्रतिमूर्ति थे, उनके प्रबोधन जन-जन कल्याण व जन-मन का तम हरने में समर्थ थे।

'जैन दर्शन' के सरल सुबोध व्याख्याता आचार्यश्री विषय पर प्रो. वीरसागर शास्त्री नई दिल्ली ने आचार्य श्री विमलसागरजी के डायरी लेखन को बताते हुए कहा कि उनकी अध्यात्म पर बहुत गहरी पकड़ थी लेकिन यह पक्ष आमजनों से छुपा हुआ है, आचार्यश्री के सूत्र वाक्यों को उल्लेखित करते हुए कहा कि आचार्यश्री ने लिखा है विपरीत भोजन से मनुष्य का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। जो अपनी आत्मा को जानेगा वो सम्पूर्ण जिनागम को जानेगा। मनुष्य ने परद्रव्यों की कीमत तो की है लेकिन स्वयं की आत्मा की कीमत नहीं की। आत्मा की हानि शारीरिक रोगों से नहीं, जितनी अपने परिणामों से होती है। जिसने अपनी आत्मा को नहीं जाना वह पढ़ा-लिखा होकर भी अज्ञानी है। इस तरह से आचार्यश्री के बोधामृत को बताया। उल्लेखनीय है कि उपाध्याय श्री ऊर्जयंतसागरजी के मार्गदर्शन में आचार्य श्री की डायरी के महत्वपूर्ण संकलन को 'स्वात्म संबोधन' के रूप में प्रकाशित कराया गया है।

एड. अनूपचंद जैन फिरोजाबाद ने बताया कि आज देश में १३०० से अधिक पिच्छीधारी संत-साध्वियाँ है जिनमें से ९७५ पिच्छीधारी आचार्य विमलसागरजी महाराज की परम्परा से जुड़े हुए है। उन्होंने उनके प्रेरक संस्मरण सुनाते हुए उन्हें चमत्कारी पुरूष कहा व उनके व्यक्तित्व के संबंध में बताया कि झोपड़ी से राजमहल तक किसी के प्रति भेदभाव नहीं, सबके प्रति समभाव था आचार्य विमलसागरजी में।

डॉ. एन.के.खींचा जयपुर ने उन्हें वात्सल्यशीलता का अनुपम आचार्य बताया। डॉ. कमलेश शर्मा जयपुर ने आयुर्वेद पर आचार्यश्री की पकड़ को स्पष्ट करते हुए आयुर्वेद विषय की जानकारी दी व बताया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट है कि ६० प्रतिशत रोग जीवन शैली से होता है, जिन्हें जीवनशैली को ठीक करके सही किया जा सकता है। उन्होंने कब, क्या, कैसे, कितना खाना विषय पर विस्तार से चर्चा की। श्री विकास गंगवाल ग्वालियर ने बताया कि आचार्यश्री ऐसे संत थे जो किसी को प्रायश्चित देते थे तो स्वयं भी प्रायश्चित ले लेते थे। श्री राजेन्द्र महावीर सनावद ने कहा कि आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज सम्पूर्ण भारतवर्ष में विहार करते रहे उनके नाम एक भी विवाद नहीं है, उन्होंने समाज में सांमजस्य बनाने का कार्य किया। आज उनके ६३ वें दीक्षा दिवस पर समाज में बढ़ रहे ३६ के वातावरण को ६३ करने का संकल्प लिया जाना चाहिये। पं. सुरेश जैन मारौरा, पं. सुरेन्द्र जैन भगवां, पं. छोटेलाल जैन झांसी ने उनके चमत्कारिक संस्मरण सुनाकर उनके अतुलनीय व्यतिव को नमन किया।

श्योपुर जैन समाज छोटा, लेकिन बड़ा कार्य किया - विधायक द्वय इस अवसर पर आतिथ्य प्रदान कर रहे श्योपुर विधायक श्री दुर्गालाल विजय, पूर्वमंत्री श्री रामनिवास रावत, नपाध्यक्ष दौलतराम गुप्ता ने कहा कि श्योपुर का जैन समाज छोटा है लेकिन उन्होंने आचार्यश्री के जन्म शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत ६३ वाँ दीक्षा जयंती का बहुत बड़ा आयोजन कर श्योपुर का नाम राष्ट्रीय क्षितिज पर स्थापित किया है। राजनेताओं ने कहा कि उन्होंने आचार्यश्री विमलसागरजी के दर्शन किए है व उनकी वात्सल्यता को महसूस किया है। जैन समाज अहिंसा का पालन करनेवाला समाज है और सभी समाजों के कार्यों में काम आता है। वे उपाध्याय श्री ऊर्जयंत सागरजी में आचार्यश्री जैसी वात्सल्यता का अनुभव करते हैं। श्योपुर जैन समाज ने विधायकद्वय व नपाध्यक्ष का पगड़ी व अभिनंदन पत्र देकर सम्मान किया।

सी.डी., विमल चालीसा एवं आचार्यश्री की पूजन पुस्तक का विमोचन

उपस्थित अतिथियों ने आचार्यश्री के जीवन दर्शन पर आधारित सी.डी. व विमल चालीसा व पूजन पुस्तक का विमोचन किया। इस अवसर पर श्री सुखानंद काला दुर्गापुरा जयपुर एवं राजेश जैन प्रतापनगर का विशेष सम्मान किया गया।

- अनुपमा जैन

२१७, सोलंकी कालोनी, सनावद
जिला खरगोन ४५१११
मो.नं. - ९४०७४९२५७७
email – rjainmahaveer@gmail.com

घोषणा पत्र

प्रकाशन अवधि	: मासिक
प्रकाशक/मुद्रक/संपादक	: उमानाथ रामअजोर दुबे
राष्ट्रीयता	: भारतीय
मालिक	: भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई - 400 004

द्वारा त्रिमूर्ति प्रिंटर्स, 5 वी.पी.रोड, सी.पी.टैंक, मुंबई - 400 004 से मुद्रित कर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई- 400 004 से प्रकाशित.

मैं एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सत्य है.

- उमानाथ रामअजोर दुबे, संपादक

एक कदम दुनिया से आगे वही लोग चलते है, अंगारों के पथ पर जिनके पांव नहीं जलते हैं ।

महावीरजी का वार्षिक लक्खी मेला–2016
रविवार,17 अप्रैल से रविवार,24 अप्रैल तक

जयपुर, 16 मार्च। हर वर्ष की भॉति इस वर्ष महावीर जयंती महोत्सव के अर्न्तगत दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी में रविवार 17अप्रैल से रविवार, 24 अप्रैल, 2016 तक वार्षिक लक्खी मेले का आयोजन होगा ।

अध्यक्ष जस्टिस नरेन्द्र मोंहन कासलीवाल एवं मंत्री महेन्द्र कुमार पाटनी के अनुसार रविवार, 17 अप्रैल, 2016 को मेले की स्थापना होगी। सोमवार,18 अप्रैल को प्रातः पूजन,भजन व सायंकाल सामूहिक आरती व शास्त्र प्रवचन होगा। मंगलवार 19 अप्रैल को महावीर जयन्ती के मौके पर प्रातः प्रभातफेरी, ध्वजारोहण एवं जल यात्रा के पश्चात धर्म सभा का विशाल आयोंजन होगा। स्थानीय स्कूल के विद्यार्थियों को मोदक वितरण, अस्पताल में मरीजों को व हिण्डौन स्थित जेल के कैदियो को फल वितरण किया जावेगा। मध्यान्ह श्री वीर संगीत मण्डल जयपुर के सहयोग से सामूहिक पूजा,कलशाभिषेक होगें। प्रर्दशनी का उद्घाटन होने के बाद विकलांगों को ट्राई–साईकिल एवं असमर्थ तथा विधवा महिलाओं को हाथ की सिलाई मशीनें वितरित की जावेगी । सायंकाल सामूहिक आरती के बाद शास्त्र प्रवचन होगा। इसी दिन सायंकाल कटला प्रांगण में दिगम्बर जैन आर्दश महिला महाविद्यालय श्री महावीरजी की बालिकाओं की ओर से सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया जावेगा। इसी दिन रात्रि में सांस्कृतिक मंच प्रांगण में पर्यटन,कला एवं संस्कृति विभाग राजस्थान के सहयोग से राजस्थानी सांस्कृतिक संध्या होगी।

मेले के प्रचार संयोजक विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि मेले का मुख्य आकर्षण भगवान महावीर की भव्य रथयात्रा शनिवार 23 अप्रैल,2016 को पूरे हर्षोल्लास से निकाली जाएगी। जिसमें जैन धर्मावलम्बियो के साथ मीणा, गुर्जर व अन्य जातियों के लोग भाग लेकर सर्व धर्म एकता व समरसता के साथ सामप्रदायिक सोहार्द का परिचय देंगें। रथयात्रा मुख्य बाजार होते हुए गंभीर नदी के तट पहुंचेगी, जहां श्रीजी के कलशाभिषेक होगें। इस अवसर पर घुड़दौड, उंट दौड़ सहित अन्य कार्यक्रम भी होंगे। इससे पूर्व परम्परागत रूप से मेले के निरीक्षण के लिए निकलने वाली नाजिम की सवारी धूमधाम से निकाली जावेगी जिसमें बैडबाजे एवं लवाजमे के साथ उपजिला कलेक्टर हिण्डौन एवं अतिशय क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष जस्टिस एन.एम. कासलीवाल रथयात्रा मार्ग, मेला क्षेत्र के अलावा कस्बे का भ्रमण कर तमाम व्यवस्थाओं का जायजा लेगें औरआवश्यक निर्देश देगें। पूरे मेला अवधि के दौरान श्री महावीरजी का मुख्य मंदिर दूधिया रोशनी से नहा उठेगा। राजस्थान सरकार द्वारा श्री महावीरजी को धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से निरन्तर विकसित किए जाने के उद्देश्य से श्रीमहावीरजी के मुख्य मन्दिर को फ्लड लाइटों एवं कलात्मक लेम्पपोस्टों से जगमग किया जावेगा दूधिया रोशनी से जगमग मुख्य मंदिर की छटा देखते ही बनेगी ।

प्रबन्धकारिणी कमेटी के मानद् मंत्री महेन्द्र कुमार पाटनी ने बताया कि मेले का समापन रविवार, 24 अप्रेल को ग्रामीण खेल–कूद प्रतियोगिता,कुश्ती दंगल प्रतियोगिता आदि के साथ होगा। मेला अवधि के दौरान श्री वीर संगीत मण्डल, जयपुर द्वारा नित्य प्रतिदिन सामूहिक पूजा, भजन सामूहिक आरती, भक्ति नृत्य आदि के कार्यक्रम होगें। मेले में सुरक्षा व्यवस्था पूर्व की भॉति पुलिस प्रशासन के साथ जैन समाज की सबसे पुरानी संस्था वीर सेवक मण्डल के सदस्यगण सम्हालेगें ।

उल्लेखनीय हैं कि चार सौ वर्ष से भी अधिक समय से पूर्व चांदन गॉव के टीले से जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की मूंगावर्णी पाषाण प्रतिमा का प्राकट्य हुआ था, वहां स्थापित चरण चिन्ह् मंदिर पर सभी समाजों के लाखों श्रद्धालुओं द्वारा आज भी पूजा की जाती हैं तथा मनौती मांगी जाती हैं ।

महावीर जी के इस लक्खी मेले में साम्प्रदायिक सौहार्द्र की मिसाल देखने को मिलती हैं। मेले में न केवल जैन अनुयायी बल्कि आस–पास के ग्रामीण क्षेत्रों के गुर्जर, मीणा, जाटव सहित सभी सम्प्रदायों के लोग श्रद्धाभाव से हिस्सा लेते हैं। गांवों से हजारों श्रद्धालुगण कनक दण्डवत करते हुए भगवान महावीर के दर्शन करने पहुंचते हैं। मेले के तहत प्रदर्शनी स्थल पर राज्य सरकार के निर्वाचन विभाग, महिला एवं बाल विकास, चिकित्सा विभाग एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सहित विभिन्न गैर सरकारी संगठनों की ओर से स्टॉल्स एवं चित्र प्रदर्शनी लगाई जाती हैं जिससे बड़ी संख्या में ग्रामीणों को इन स्टॉल्स पर योजनाओं के बारे में जानकारी मिलती हैं । निर्वाचन विभाग की प्रदर्शनी में लोगों को मतदाता सूची में नाम जुड़वाने, हटवाने, संशोधित करवाने एवं मतदान करने के बारे में जानकारी मिलती हैं ।

★★★★

जिसमें जिनदेव विराजमान हैं, वह तीर्थ है (उत्तरपुराण 54, 5)

भट्टारक लक्ष्मीसेन महास्वामी जी का अभिनन्दन

दिनांक 26 मार्च 2016, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली में कोल्हापुर जैनमठ के स्वस्तिश्री लक्ष्मीसेन भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामीजी ने शिवाजी विद्यापीठ, भगवान महावीर अध्यासन केन्द्र द्वारा प्रतिमा-प्रतिष्ठा एव चिकित्सक अध्ययन विषय पर पीएच.डी. शोधोपाधि प्राप्त की है। वर्तमान के जैन परम्परा में कुल पन्द्रह भट्टारक दक्षिण भारत में विद्यमान हैं। उनमें लक्ष्मीसेन भट्टारक जी सबसे वरिष्ठ हैं। अपने उम्र के 65 से 70 के मध्य प्रदीर्घ अध्ययन गहन शोध के साथ डॉक्टरेट उपाधि हासिल करने वाले प्रथम भट्टारक हैं।

विगत 5 दशक में भारतीय संस्कृति समुन्नयन में भाषा, लिपि, पुरातत्व, समाजप्रबोधन, श्रमणसंस्कृति संरक्षण आदि क्षेत्रों में दिये गए मौलिक योगदान के उपलक्ष्य में विद्यापीठ के कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय जी के करकमलों से गुरुजुणगौरव-पत्र प्रदान कर बहुआयामी व्यक्तित्व का अभिनन्दन किया। कुन्दकुन्द भारती नई दिल्ली द्वारा स्थापित आचार्य कुन्दकुन्द स्मृति व्याख्यानमाला का कार्यक्रम हुआ। इस आयोजन के विशिष्ट वक्ता प्रो. गयाचरण त्रिपाठी निदेशक बी. एल. आई. दिल्ली ने प्राकृतभाषा का स्वरुप, महत्त्व एवं ऐतिह्य जैसे गम्भीर विषय प्रतिपादन के साथ दो व्याख्यान दिये।

राष्ट्रिय प्राकृत काव्य संगोष्ठी में कुल 15 शोधपत्र 4 सत्रों में प्रस्तुत हुए। इस ज्ञानगोष्ठी के मध्य विद्यापीठ के विशिष्ट विद्वज्जनों में साहित्य-संस्कृति-संकायप्रमुख प्रो. भागीरथि नंद, प्रो. सुदीप कुमार जैन, प्रो. इच्छाराम द्विवेदी, प्रो. वीर सागर जैन आदि उपस्थित थे। दिल्ली जैनसमाज के प्रधान श्री चक्रेश जैन, कुन्दकुन्द भारती न्यास के अध्यक्ष साहूश्री अखिलेश जैन, मंत्री श्री मुकेश जैन, कोषाध्यक्ष श्री अनिल जैन काठमाडु, वैशाली महावीर जन्मभूमि निर्माण समिति के प्रमुख श्री सतीश चन्द जैन (एस.सी.जे.) एवं जैनसमाज के गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। प्रा. जयकुमार उपाध्ये प्राकृतभाषा विभागाध्यक्ष ने परिश्रम के साथ सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन किया। वे अपने विद्याभूषण चैरिटेबल ट्रस्ट के सौजन्य से समारोह की गरिमा बढाई। डॉ कल्पना जैन एवं शोधछात्र अन्य सभी छात्र-छात्राएँ परिश्रम के साथ कार्यक्रम को सफल बनाया।

स्वराज जैन, टाइम्स ऑफ इंडिया
मो. 91 9899614433

प्रशिक्षित विद्वान, पुजारी, प्रबंधक, कार्यालय सहायक, कम्प्युटर आपरेटर हेतु शीघ्र सम्पर्क करें।

आपको जानकर हर्ष होगा कि श्री दिग. जैन सिद्ध क्षेत्र द्रोणगिरी में श्री भारतवर्षीय दिग. जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी मुंबई द्वारा संचालित श्री दि. जैन तीर्थ प्रबंधन प्रशिक्षण संस्थान सिद्ध क्षेत्र द्रोणगिरि के वर्ष २०१५-२०१६ के सत्र का समापन समारोह १७-०४-२०१६ दिन रविवार को होने जा रहा है।

संस्थान के विगत सत्रों में प्रशिक्षित छात्रों को विभिन्न तीर्थो, मंदिरों औद्योगिक प्रतिष्ठानों में नियुक्त किया गया है। जहां पर सभी छात्र दक्षता पूर्वक अपने कार्य का संपादन कर रहे हैं।

संस्थान द्वारा छात्रों को एकाउंट, कम्प्युटर, प्रबंधन, पूजन, विधी विधान, जैन दर्शन, ज्योतिष आदि विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती है।

यदि आप अपनी संस्था मंदिर जी अथवा औद्योगिक प्रतिष्ठान के लिये योग्य कायकर्ता चाहते हैं। तो अपनी आवश्यकता के अनुरूप छात्रों का चयन यहां आकर कर सकते हैं। इसके साथ ही सिद्ध क्षेत्र द्रोणगिरि के अनुपम गगनचुंबी जिनालयों के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त होगा।

यदि द्रोणगिरि आने की अनुकूलता न हो तो आप अपनी आवश्यकता का पत्र अप्रैल २०१६ तक संस्थान कार्यालय पर भेजे। यहां से योग्य व्यक्ति का चयन कर उसे आपके यहां भेज दिया जायेगा।

प्रशिक्षित छात्रों की संख्या सीमित है! कृपया अपनी आवश्यकता का पत्र शीघ्र भेजे।

पता:- श्री दिग. जैन तीर्थ प्रबंधन प्रशिक्षण संस्थान सिद्ध क्षेत्र द्रोणागिरी (लघु सम्मेद शिखर) सेंधपा

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

भगवान महावीर जन्मभूमि
वैशाली (बिहार)

धर्मानुरागी महानुभाव,

सादर जय जिनेन्द्र।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

हमें यह सूचित करते हुए परम हर्ष हो रहा है कि आपके अभूतपूर्व सहयोग से भगवान महावीर जन्मभूमि का चहुँमुखी विकास हो रहा है। पिछले वर्ष सभी शिखरों और छत्रियों पर सफेद मार्बल का कार्य सम्पूर्ण हो गया है बाकी मार्बल का कार्य जारी है। अब भोजनशाला एवं मन्दिरजी में सौन्दर्यीकरण का कार्य प्रगति पर है। मानस्तम्भ, कर्नाटका भवन, महाराष्ट्रा भवन यह सभी कार्य अभी क्रमश: हैं और यह सभी कार्य आपके असीम सहयोग से ही सम्पन्न होंगे।

आपके सहयोग से ही भगवान महावीर जन्मभूमि के संरक्षण, संवर्द्धन एवं उसके समुचित विकास में अद्भुत सफलता प्राप्त हो रही है, जिसके लिए भगवान महावीर स्मारक समिति आपके परिवार का हृदय से आभार मानती है। हमें पूर्ण विश्वास है कि भगवान महावीर स्मारक समिति को आपका सहयोग एवं मार्गदर्शन सदैव इसी प्रकार मिलता रहेगा।

महावीर जयन्ती के शुभ अवसर पर 19 अप्रैल, 2016 में होने वाले **महामस्तकाभिषेक** में भगवान महावीर का अभिषेक करें या करवायें। भगवान की प्रतिमा के जलाभिषेक हेतु कलश आप भी ले सकते हैं। संस्था को आपके द्वारा राशि भेज देने पर हम अभिषेक किया हुआ कलश आपके घर भेज देंगे। कलश की राशि निम्नलिखित है—

कांस्य कलश 5,100/- रुपये, वैशाली कलश 11,000/- रुपये, रजत कलश 25,000/- रुपये,
स्वर्ण कलश 51,000/- रुपये, रत्न कलश 1,11000/- रुपये

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपका सहयोग एवं मार्गदर्शन सदैव इसीप्रकार मिलता रहेगा।

कलश बुक कराने के लिए निम्न महानुभावों एवं नीचे दिए गए पते पर सम्पर्क करें।

सतीश चन्द जैन SCJ	अनिल जैन	राजेन्द्र जैन	श्रीपाल जैन
M : 09810081861	M : 09811901881	M : 09873027779	M : 09810005821

अकाऊंट उपसमिति अध्यक्ष – नरेश जैन (कामधेनु सरिया), दिल्ली

आपके द्वारा भेजी जाने वाली धनराशि भगवान महावीर स्मारक समिति, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, IFSC Code : SBIN 0001624 जे.एन.यू. शाखा, नई दिल्ली में खाता संख्या 10596551078 में जमा कराई जा सकती है। राशि जमा कराने के पश्चात् कार्यालय से रसीद अवश्य प्राप्त करें।

दिल्ली कार्यालय : कुन्दकुन्द भारती, 18-बी, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110067 ई-मेल : lordmahavirbirthplace@gmail.com

नरेश जैन (प्रबंध निदेशक-आशियाना इस्पात लिमिटेड)

ASHIANA GROUP A Symbol of Quality

ASHIANA ISPAT LIMITED

(ISO 9001-2008 Certified Co.)

KAMDHENU SARIYA

Mfr.: ASHIANA®, KAMDHENU, AL KAMDHENU™ GOLD TMT

Regd. Office: A-1116, RIICO Industrial Area, Phase-III, Bhiwadi,
Distt. - Alwar (Rajasthan), E-mail: ashianagroup@yahoo.co.in
Corp. Office: C-9/36, Sector-8, Rohini, Delhi-110085

दमदार सरिया TMT Grade Fe 415,500,550